भारत के तीर्थ

'मिथिलेश' प्रभाकर

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार की ओर से भेंट

प्रकाश प्रकाशन
२२६५ : मोती कटरा
आगरा

द्वितीय संस्करण

मूल्य : एक रुपया पचास नये पैसे

मुद्रक : हीरा आर्ट प्रेस, दिल्ली

दो शब्द

भारत सदा एक धर्म-प्रधान देश रहा है। अतः यहाँ तीर्थ स्थानों का अत्यधिक महत्त्व होना स्वाभाविक ही है। प्राचीनकाल में जब आवागमन के साधन सुलभ नहीं थे तब भी तीर्थ स्थानों की यात्राएँ की जाती थीं। वास्तव में ये तीर्थ ही देश की विभिन्नता में एकता स्थापित करने में सहायक रहे हैं।

इस पुस्तक में तीर्थों के महत्त्व के साथ-साथ देश के विभिन्न धर्मों के तीर्थ स्थानों का परिचय दिया गया है। इसके अतिरिक्त उन तीर्थों का भी वर्णन है जो किसी धर्म विशेष से सम्बन्धित न होकर सारे भारत राष्ट्र द्वारा आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं।

यदि यह पुस्तक पाठकों के ज्ञान-वर्द्धन के साथ ही उनमें एकता, सहिष्णुता एवं सह-अस्तित्व की भावना भर सकी तो लेखिका अपना प्रयास सफल समझेगी।

१५ जुलाई, १९६१ **'मिथिलेश' प्रभाकर**

तीर्थों की कहानी •	१
हिन्दुओं के तीर्थ •	७
दक्षिण भारत के कुछ तीर्थ •	२३
बौद्धों के तीर्थ •	२९
जैनियों के तीर्थ •	३१
मुसलमानों के तीर्थ •	३३
सिक्खों के तीर्थ •	३५
तीर्थों का महत्व •	३६
तीर्थ यात्रा से लाभ •	४१
तीर्थों में सुधार •	४५
सब मिल एक जहाँ पर होते •	४८
नए तीर्थ •	६०

तीर्थों की कहानी

भारत एक विशाल देश है। उसकी समतल और उपजाऊ धरती पर बड़ी-बड़ी नदियाँ बहती हैं। बारहों महीने इन नदियों का पानी उत्तर से लेकर दक्षिण तक सारे देश को हरा-भरा बनाये रखता है। बड़े-बड़े मैदान, खेत, और वन देश का धन हैं। बहुत-सी नदियाँ दुनिया के सबसे ऊँचे पहाड़ हिमालय से निकलती हैं और महासागर में गिरती हैं। हिमालय को भारत के रहने वाले बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। उसकी गोद में बड़े-बड़े देव स्थान हैं। उसकी गुफाओं में रहकर पुराने समय में भारत के अनेक मुनि जनों ने बड़े ज्ञान की खोज की थी। कहा जाता है कि भारत में आर्य लोग निवास करते थे। आर्य बड़े मेहनती थे और वे आपस में मेल से रहते थे। इसी कारण उनका रहन-सहन और उनके विचार संसार में सब जगह फैल गये। संसार की सबसे पुरानी सभ्यता आर्यों की सभ्यता है। ये आर्य लोग ईश्वर को मानते थे और संसार की हर वस्तु को ईश्वर का रूप मानते थे। उनके पूजा-पाठ में आग, पानी, बादल, सूरज, चाँद और अनेक देवी-देवताओं की आराधना मिली हुई थी।

आर्यों के अलावा और दूसरी जाति के लोग भी भारत में आये। उनका धर्म और उनके विचार आर्यों से कुछ मिलते थे और कुछ कहीं अलग भी थे। वे सब लोग आर्यों में मिल-जुल गये। बाहर से आने वाली इन जातियों में मुसलमान लोग ऐसे थे जो आज भी भारत में रह रहे हैं। उनका धर्म और उनके विचार आर्यों अथवा हिन्दुओं से कुछ अलग हैं।

आर्य लोग ही हिन्दू कहलाये और उनका धर्म भारत में हिन्दू धर्म कहलाया। हिन्दू धर्म के अनेक भाग हैं। अनेक देवताओं के नाम पर हिन्दू धर्म में अलग-अलग सम्प्रदाय बन गये। हिन्दू धर्म के नियमों से कहीं-कहीं अलग होकर भी कुछ हिन्दुओं ने अपने नये सम्प्रदाय बनाये। इन सब सम्प्रदायों का एक कोई नेता होता था। वही उस सम्प्रदाय का सबसे बड़ा आदमी माना जाता था। इस प्रकार हमारे देश में आज हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुसलमान, सिक्ख तथा ईसाई मतों के मानने वाले लोग अधिक हैं। सभी लोग अपने-अपने धर्म को चलाने वाले व्यक्ति के जन्म स्थान को पवित्र मानते हैं। उससे सम्बन्ध रखने वाले और कई स्थानों को पवित्र माना जाता है। हिन्दू लोग तो ईश्वर के अवतार को मानते हैं इसलिए उनके बहुत से स्थान हैं जो पवित्र माने जाते हैं। मुसलमान, 'ईश्वर एक ही है' ऐसा मानते हैं। उनके यहाँ पैगम्बरों को वैसा ही माना जाता है जैसा हिन्दुओं में अवतारों को। उनके यहाँ ईश्वर के बड़े-बड़े भक्त भी पूज्य माने जाते हैं। इन पैगम्बरों, पीरों और ईश्वर भक्तों से सम्बन्ध रखने वाले बहुत से स्थानों को मुसलमान पाक मानते हैं।

हिन्दू लोग इन पवित्र स्थानों को तीर्थ कहते हैं। तीर्थ संस्कृत भाषा का शब्द है इसका अर्थ होता है जिसके द्वारा तरा (मुक्ति) जाये। हिन्दू लोग संसार को एक अपार सागर मानते हैं। इस संसार से पार हो जाना कि फिर इस में न आना पड़े तर जाना कहलाता है। तीर्थ वे स्थान हैं जहाँ पहुँचकर लोगों का मन शुद्ध हो जाता है और वे बुराई करने की ओर नही झुकते।

भारत तीर्थों का देश है। हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक बहुत से तीर्थ हैं। संसार सागर से तर जाने की कामना

से ही हिन्दू लोग इन तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हैं। इन तीर्थों को धरती, हवा, जल सब कुछ पवित्र होता है। वहाँ रह कर मनुष्य पाप रहित हो जाता है।

ये तीर्थ कैसे बने ? हिन्दुओं के धर्म-ग्रन्थों में तीर्थों का वर्णन है। जितने भी तीर्थ हैं वे सभी भगवान तथा उनके भक्तों के संग से बने हैं। महापुरुषों, विद्वानों तथा पवित्र लोगों के प्रभाव से तीर्थ बने हैं। पहले समय में बड़े-बड़े धर्म ज्ञाता और महात्मा लोग धर्म चर्चा करने के लिए जहाँ-तहाँ मिला करते थे। उनके मिलने के ये स्थान तीर्थ बन गये। जिस तरह शरीर में शिर और मुख आदि अंग पवित्र माने गये हैं वैसे ही पृथ्वी के कुछ स्थान पवित्र माने गये हैं। कहीं-कहीं पर धरती के प्रभाव से, कहीं-कहीं गंगा आदि नदियों के प्रभाव से स्थान तीर्थ बने गये। कहीं ऋषि-मुनियों और सन्त महात्माओं की तपस्या और भगवान की लीला भूमि होने से स्थानों को तीर्थ मान लिया गया।

पहले समय में नदियों से होकर ही लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को जाया करते थे। इसलिए नदियों के किनारे पर बड़े-बड़े नगर बस गये। ये बड़े-बड़े नगर भी अपनी विशेषता के कारण कहीं-कहीं तीर्थ बन गये। मनुष्य का स्वभाव भी कुछ ऐसा है कि उसे अपने घर में रहकर सन्तोष नहीं होता। वह बाहर जाकर और लोगों से मिलना चाहता है। पुराने समय में एक स्थान से दूसरे स्थान तक आना जाना आज की भाँति सुगम नहीं था। बड़ी तैयारी और बड़े कष्ट उठाकर आदमी बाहर जा पाता था। वहाँ और लोगों से मिलकर वह बहुत सी बातें जान लिया करता था। वह समझता था कि उसने अपने जीवन में बड़ा काम कर लिया। इसलिए मानव-संगम के ये स्थान भी तीर्थ बन गये। तीर्थों की बहुत कुछ महिमा तो इसी में है कि उन

तक पहुँचना कठिन होता था। कोई बड़ा धर्मोपदेशक, कोई विद्वान अथवा साधु-संन्यासी जहाँ रहा करता था, वहाँ लोग जाते थे और उसके स्थान को तीर्थ समान मानते थे। हिन्दुओं की पुरानी पुस्तकों में बहुत से तीर्थों के विषय की बड़ी मजेदार और चमत्कार की कहानियाँ मिलती हैं। शिव के उपासकों में एक कहानी कही जाती है। कोई ग्वाला गाय चराने जाता था। जब संध्या को गायें लौटतीं तो एक गाय के दूध नहीं निकला करता था। गाय का मालिक कहता कि इस गाय का दूध ग्वाला दुह लेता है। ग्वाला उस पर दुखी होता था। एक दिन ग्वाले ने देखा कि गाय एक जगह पर खड़ी है और उसके थनों से दूध की धारा बह रही है। जब यह बात गाय के मालिक से कही गई तो उसने आकर इस घटना की जाँच की। उस स्थान की खुदाई करने पर वहाँ शिवलिंग मिला। जल के तीर्थों के लिए भी ऐसी ही कहानी कही गई है। एक बार एक शिकारी किसी जंगल में पहुँचा। उस शिकारी के कोढ़ था। उसने जंगल में एक गढ़ा देखा। उस गढ़े में एक पशु लोट रहा था। गढ़े के कीचड़ वाले जल के प्रभाव से पशु का एक शरीर-स्थान सफेद हो गया। यह देखकर शिकारी उस जल में स्नान करने उतरा और उस स्नान से उसका रोग जाता रहा। इस कथा के आधार पर कई स्थान जो तालाब या किसी पोखर पर बसे थे तीर्थ बन गये। ऐसे नदी-सरोवर, मन्दिर अथवा स्थान जहाँ कोई अलौकिक सी बात दिखाई दी तीर्थ मान लिये गये।

तीर्थ तीन प्रकार के माने गये हैं :—(१) अचल तीर्थ (२) लीला तीर्थ। (३) संत तीर्थ। **अचल तीर्थ**—वे स्थान हैं जो एक ही स्थान पर हैं। संसार के आरम्भ से उनकी भूमि में अलौकिक शक्ति समा गई है। मानसरोवर, काशी,

गंगा, यमुना, नर्मदा तथा इनके अन्य स्थान ऐसे ही तीर्थ हैं। **लीला तीर्थ**—वे स्थान हैं जहाँ भगवान ने अवतार लेकर अपनी लीला दिखाई है। अयोध्या, मथुरा आदि ऐसे ही स्थान हैं। **सन्त तीर्थ**—वे तीर्थ हैं जो कोई स्थान नहीं हैं। मनुष्य ही तीर्थ है। जो मनुष्य भगवान की आराधना में लीन है, जो सबकी भलाई की बात करता है, परोपकारी और सज्जन है वह स्वयं तीर्थ है। उसके शरीर के तेज तथा उसके अच्छे विचारों का प्रभाव और लोगों को भी अच्छा बनाता है। ऐसे सन्तों के चरण जहाँ भी पड़ते हैं, वहाँ की धूल भी तीर्थ बन जाती है। ऐसे सन्तों की जन्म-भूमि, तपोभूमि और देहत्याग-भूमि भी तीर्थ है। देवता लोगों ने भी भारत की भूमि पर अनेक लीलाएँ कीं। हिन्दुओं के विचार से भारत का प्रत्येक स्थान तीर्थ है। असल में पुराने लोगों ने जिस सदाचार और ज्ञान को प्राप्त करना जरूरी समझा उसे धर्म के साथ जोड़ दिया। तीर्थों के विषय में भी ऐसा ही है। तीर्थों का महत्व मनुष्य के लिए बहुत है। उनमें उसकी आत्मा का विकास होता है।

भारत के अनेक प्राचीन तीर्थों में से बहुत से तीर्थों का तो आज के लोगों को पता भी नहीं है। समय की गति ने, जल के वेग ने, आँधी-तूफानों ने बहुत से पुराने स्थानों को लोप कर दिया। हजारों वर्ष पुरानी बात हो गई। उसको जानना आज कठिन हो गया है। कुछ पुराने तीर्थ आज भी ज्ञात हैं। बहुत से तीर्थ ऐसे हैं जिनके सम्बन्ध में भ्रम है। बाल्मीकि आश्रम कई हैं। कौन सा बाल्मीकि आश्रम असली है, यह जानना कठिन है। तुलसीदास की जन्म-भूमि राजापुर है या सोरों इस सत्य को जानना कठिन हो गया है। बहुत से तीर्थ ऐसे हैं जिनके स्थान हैं किन्तु उनके नाम बदल गये हैं। जो भी तीर्थ आज हैं उन्हें भलो प्रकार

जानना चाहिए और उनसे लाभ उठाना चाहिए ।

तीर्थों के नाम पर धन पैदा करने वाले पण्डे-पुजारियों ने कहीं-कहीं पर किसी देवता या किसी ऋषि के नाम की झूठी मूर्ति रख कर तीर्थ बनाने का प्रयत्न किया है। कुछ स्थान ऐसे बन भी गये हैं। इनसे जनता के बीच भ्रम फैलता है। अधिकांश तीर्थों के विषय में धर्म-ग्रंथों में वर्णन दिया हुआ है। उसके सहारे जहाँ तक हो सके स्थान के असली होने का पता लगाना चाहिए ।

हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ

दुनिया के बहुत से देशों में तीर्थ हैं। हर देश के लोग कहीं-न-कहीं तीर्थ-यात्रा करते हैं, किन्तु भारत के हिन्दू सबसे अधिक तीर्थ-यात्रा करते हैं। भारत में तीर्थों की गिनती नहीं की जा सकती, यहाँ तक कि किसी-किसी गाँव में एक दो स्थान ऐसे होते हैं जिन्हें गाँव के भोले-भाले लोग तीर्थ मानकर पूजते हैं। दूर-दूर के गाँवों से लोग वहाँ आया जाया करते हैं। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर, समतल मैदानों में और नदियों के किनारों पर बड़े-बड़े तीर्थ बने हुए हैं। कहीं कोई देवी का मन्दिर है, कहीं किसी देवता की मूर्ति है और कहीं किसी की समाधि है। इसी प्रकार ईसाइयों और मुसलमानों के भी जरोसलम, मक्का, मदीना आदि बड़े तीर्थ हैं। भारत में भी अजमेर शरीफ जैसे बहुत से स्थान और दरगाहें हैं, जहाँ हर साल बहुत से यात्री इकट्ठे होते हैं। हिन्दुओं के तीर्थ भारत में सबसे अधिक हैं। वे इतने अधिक हैं जितने संसार की किसी जाति के नहीं हैं।

भारत के उत्तरी भाग में तीर्थ बहुत अधिक हैं। दक्षिण भारत में बड़े-बड़े सुन्दर देव मन्दिर हैं। देश की बड़ी-बड़ी नदियों के तटों पर तीर्थ हैं और पहाड़ की ऊँची-ऊँची चोटियों पर भी तीर्थ हैं। हर मौसम में तीर्थ यात्रा होती है और हर तीर्थ स्थान का अपना निराला महत्व है।

पहाड़ों के तीर्थ

हिमालय पर्वत की गोद में हिन्दुओं के बड़े-बड़े तीर्थ हैं। मानसरोवर, कैलाश इनमें प्रथम हैं। स्कन्द पुराण में मान-सरोवर तीर्थ की महिमा लिखी है। तुलसीदास की रामायण

में भी लिखा है :—

'परम रम्य गिरिवर कैलासू, सदा जहाँ सिव उमा निवासू'।

कैलाश की यात्रा सबसे कठिन है। इस यात्रा में हिमालय को पूरा पार करके तिब्बत में तीन सप्ताह रहना पड़ता है। यहाँ पहुँचने के लिए तीन रास्ते हैं :—
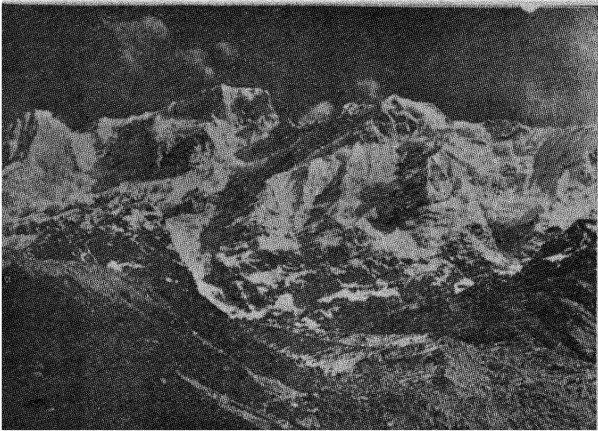
केदारनाथ जाने का कठिन मार्ग

१. छोटी लाइन एन. ई. आर. के टनकपुर स्टेशन से पिथौरागढ़ होकर लिपू दर्रे से जाने वाला मार्ग। २. छोटी लाइन के काठगोदाम से अल्मोड़ा, कपकोट; जयन्ती, कुँगरी-विंगरी घाटी से जाने वाला मार्ग। ३. बड़ी लाइन के ऋषिकेश स्टेशन से जोशीमठ, बद्रीनाथ होकर जाने वाला मार्ग। इन तीनों रास्तों में टनकपुर वाला रास्ता सबसे छोटा कहा जाता है। पूरे हिमालय को पार करके तिब्बत के पठार में तीस मील की दूरी पर पहाड़ों से घिरे दो बड़े-बड़े सरोवर हैं। इनका जल साफ, कुछ-कुछ नोला है। मानसरोवर इनमें से छोटे सरोवर का नाम है। उसमें हंस

बहुत हैं। कैलाश मानसरोवर से बीस मील दूर है।

केदारनाथ, बदरीनाथ हिमालय पर दूसरा तीर्थ है। ऋषिकेश से जोशीमठ होकर यात्री यहाँ पहुँचते हैं। केदारनाथ जाने वाले यात्री रुद्रप्रयाग से पैदल जाते हैं। बदरीनाथ की बड़ी महिमा है। बदरीनाथ के मन्दिर के समीप ही शंकराचार्य का मन्दिर है। आदि केदार, तप्त कुण्ड, पंचशिला, गरुड़ शिव आदि कई स्थान हैं जिन्हें यात्री देखने जाते हैं।

अमरनाथ—अमरनाथ कश्मीर होकर जाना होता है। यहाँ तक पहुँचने के लिए बहुत कठिन मार्ग को पार करना होता है। अमरनाथ में ठहरने का स्थान नहीं है। यहाँ बर्फ से बना हुआ शिवलिंग दर्शनीय है और तीर्थ यात्रा का इसीलिए महत्व है। यहाँ जाड़ों की पूर्णिमा को स्वतः ही बर्फ का शिवलिंग बनता है। इस दिन हजारों की संख्या में यात्री दर्शनार्थ आते हैं।

पूर्णागिरी—हिमालय की गोद में एक प्रसिद्ध तीर्थ है। टनकपुर से ९-१० मील की दूरी पर शारदा के किनारे नेपाल राज्य में पूर्णागिरी एक पहाड़ है। यहाँ देवी का मन्दिर है। चढ़ाई कठिन है। यहाँ कई मन्दिर हैं। महाकाली मन्दिर सबसे ऊँचे पर है।

मैदानों के तीर्थ

मैदान के तीर्थ स्थानों में कुरुक्षेत्र, गढ़ मुक्तेश्वर, शुकताल, मथुरा, वृन्दावन, नीमसार, विन्धवासिनी, बटेश्वरनाथ वैद्यनाथ धाम, भुवनेश्वर, पुरी, उज्जैन, ओंकारेश्वर, नासिक, मोरेश्वर क्षेत्र, पंढरपुर और पुष्कर आदि प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हैं।

कुरुक्षेत्र हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ स्थान है। उपनिषद्
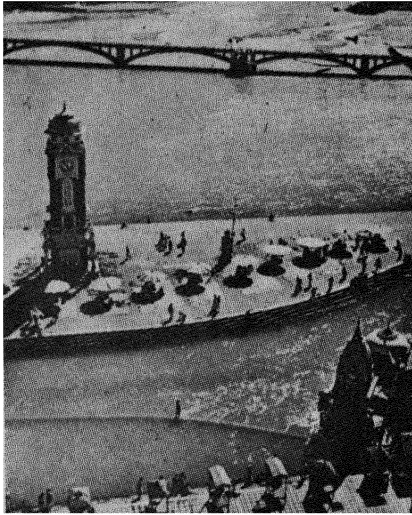
हरिद्वार—

हरिद्वार : हरि की पैड़ी

हरिद्वार उत्तर प्रदेश का माना हुआ तीर्थ स्थान है। यह बड़ी लाइन का स्टेशन है। पहुँचने में कोई कठिनाई नहीं होती। यहाँ ब्रह्मकुण्ड, हरि की पैड़ी, मनसादेवी आदि देखने योग्य स्थान हैं। इनके साथ ही और भी कई तीर्थ स्थान पहाड़ों पर हैं। अमरनाथ, गंगोत्तरी, जमनोत्तरी, ऋषिकेश ये बड़े स्थान हैं।
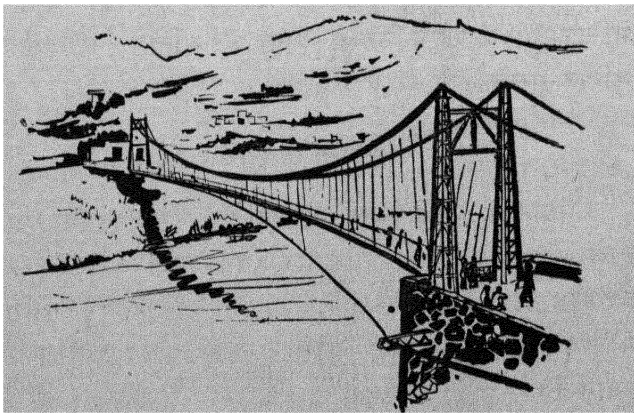
ऋषिकेश : लक्ष्मण झूला

और ब्राह्मण ग्रन्थों में कुरुक्षेत्र की महिमा का वर्णन है। यहाँ कौरवों और पांडवों की लड़ाई हुई थी। पहले कुरुक्षेत्र
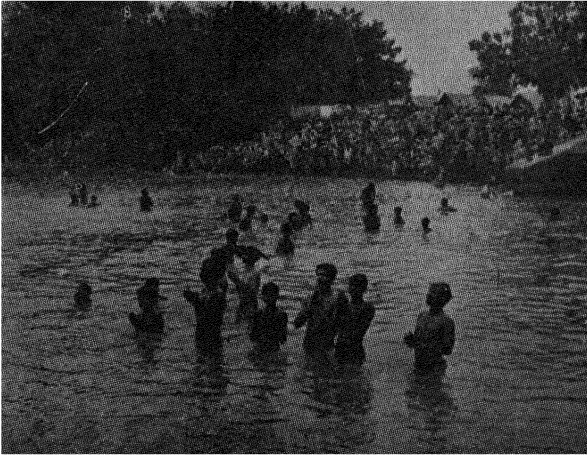
कुरुक्षेत्र : सूर्यग्रहण के समय यात्री स्नान करते हुए व मेले का दृश्य

एक बहुत बड़े स्थान का नाम था। इसमें बहुत से शहर और गाँव थे। थानेश्वर, पानीपत, तरावड़ी और करनाल कुरुक्षेत्र की सीमा में ही थे। इस क्षेत्र में चार सरोवर और चार पवित्र कूप हैं। पहले यहाँ बहुत से बन थे। जब सूर्य ग्रहण होता है तो कुरुक्षेत्र में बहुत बड़ा मेला लगता है।

नीमसार मिसरिख—उत्तर रेलवे पर बालामऊ जंकशन से १६ मील की दूरी पर नीमसार स्टेशन है। यहाँ से १ मील दूरी पर चक्रतीर्थ है। यह एक सरोवर है। यहाँ भूतनाथ का एक मन्दिर है। नीमसार से ५ मील दूर सीतापुर-हरदोई सड़क पर मिसरिख है। यहाँ दधीचि कुण्ड और एक मन्दिर है।

चित्रकूट—मानिकपुर-झांसी लाइन पर चित्रकूट स्टेशन

है। चित्रकूट की बस्ती का नाम सीतापुर है। यहाँ का मार्ग सरल नहीं है। चित्रकूट में राम, सीता और लक्ष्मण ने निवास किया था। चित्रकूट में कामदगिरी की परिक्रमा होती है। यहाँ जानकी कुण्ड, अत्रि आश्रम, गुप्त गोदावरी, भरतकूप, रामशैया आदि स्थान देखने योग्य हैं।

विन्ध्यवासिनी—मिर्जापुर से ४ मील पर विन्ध्याचल स्टेशन प्रसिद्ध है। यहाँ देवी के तीन मन्दिर हैं। विन्ध्यवासिनी अधिक प्रसिद्ध है। पुराणों में लिखी हुई दुर्गा की कथा से इस स्थान का सम्बन्ध है। यहाँ पर शुंभ, निशुंभ राक्षसों को देवी ने मारा था। सप्त सागर देखने योग्य स्थान है।

पुरी—जगन्नाथपुरी। कटक से २६ मील दूर खुरदा रेलवे स्टेशन से पुरी तक लाइन जाती है। खुरदा से पुरी २८ मील है। पुरी में बहुत से मठ हैं, कई धर्मशालायें हैं। यहाँ कई सरोवर और कुण्ड हैं। इनमें यात्री स्नान करते हैं। यहाँ जगन्नाथ जी का बहुत बड़ा मंदिर है जो दो परकोटी के भीतर है। यहाँ आसाढ़ के महीने में जगन्नाथ रथ यात्रा का एक विशाल उत्सव होता है। भारत के कोने-कोने से लोग यहाँ दर्शन के लिए आते हैं।

नासिक—नासिक भारत के बड़े तीर्थों में है। यहाँ पंचवटी में राम ने निवास किया था। यहाँ बारह वर्ष बाद कुम्भ का मेला होता है। दिल्ली से बम्बई जाने वाली रेल की लाइन पर नासिक रोड स्टेशन है। नासिक के आस-पास बहुत से मन्दिर हैं और बहुत से कुण्ड भी हैं। यहाँ थोड़ी-थोड़ी दूर पर सीता सरोवर, पाण्डव गुफा; जटायु क्षेत्र और अगस्त्य का आश्रम है। नासिक से १७ मील दूर त्रयंबकेश्वर का मन्दिर है। यह एक तीर्थ स्थान है। इस मंदिर की परिक्रमा की जाती है।
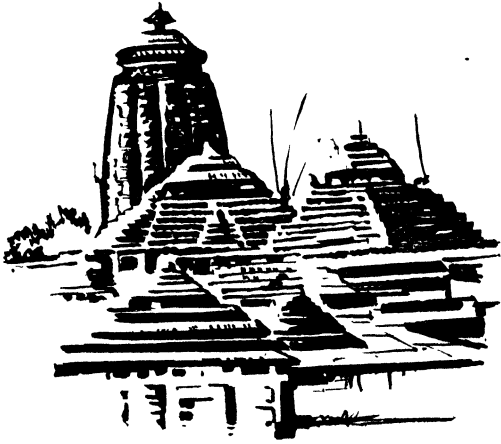
जगन्नाथ मन्दिर सिंह द्वार के बाहर
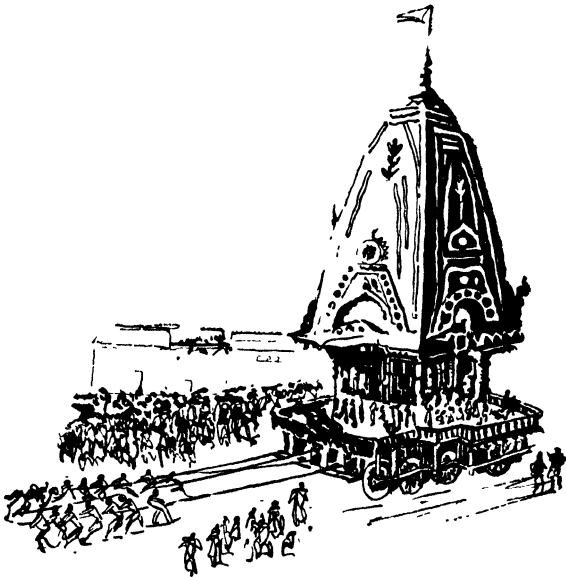
जगन्नाथ पुरी की रथ यात्रा

उज्जैन--आगरा से उज्जैन को सीधा रास्ता है। उज्जैन को पुराने समय में अवन्तिका भी कहते थे। यहीं राजा विक्रमादित्य की राजधानी थी। यहाँ १२ वर्ष बाद कुम्भ का मेला होता है। और दूर-दूर से यात्री यहाँ आते हैं। उज्जैन में देवी-देवताओं के कई मन्दिर हैं। महाकाल का सबसे बड़ा मन्दिर है। उज्जैन क्षिप्रा नदी के किनारे पर है।
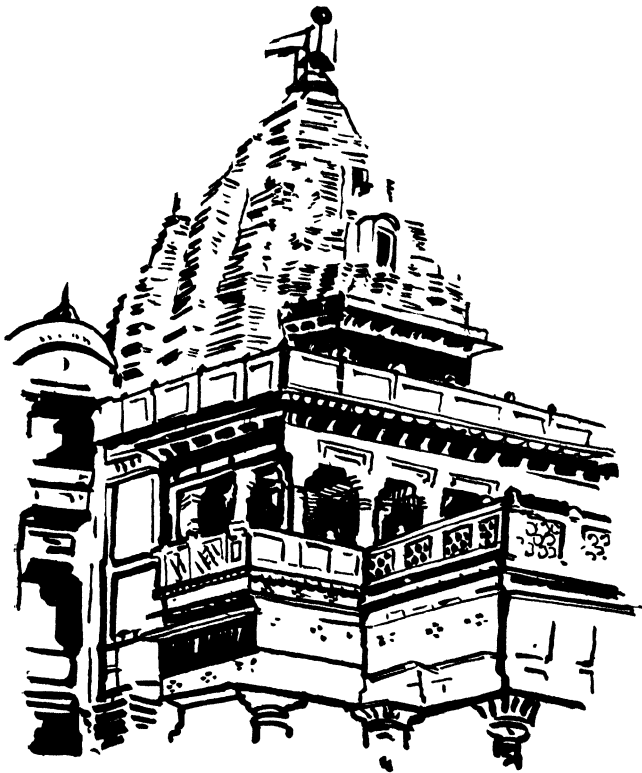
उज्जैन : महाकाल का विशाल मन्दिर

गया--भारत का मुख्य पितर तीर्थ गया है। दिल्ली-कलकत्ता लाइन पर गया प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ प्रत्येक हिन्दू

यात्रा करना चाहता है। गया जाकर लोग श्राद्ध करते हैं। गया में फलगू नदी है और आस-पास कई मन्दिर, शिलाएँ

गया : बौद्ध वृक्ष एवं मन्दिर

और कुण्ड हैं। विष्णु गया का बड़ा मन्दिर है।

मोरेश्वर—बम्बई-रायचूर लाइन पर मोरेश्वर एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ पर गणेश कुण्ड है। इसको अंकुश तीर्थ भी कहते हैं। इसके पास ही गणेश का मंदिर है। यहाँ से ५ मील की दूरी पर गणेश गया है।

पंढरपुर—पंढरपुर महाराष्ट्र राज्य का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। देवशयनी और देवथानी एकादशी को दूर-दूर के लोग यहाँ यात्रा करने आते हैं। सन्त तुकाराम, नरहरि, नामदेव आदि सन्तों ने यहाँ वास किया है। बम्बई-पूना-रायचूर लाइन पर पंढरपुर स्टेशन है। पंढरपुर का मुख्य मंदिर विट्ठल मन्दिर है। गौरीशंकर, नरसिंहपुर यहाँ के बड़े स्थान हैं। नरसिंहपुर को प्रयाग और पंढरपुर को काशी के समान माना जाता है।

पुष्कर—दिल्ली से अहमदाबाद जाने पर अजमेर आता
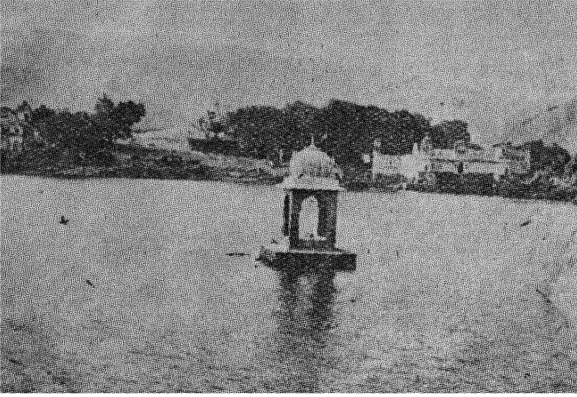
पुष्कर : सरोवर का दृश्य
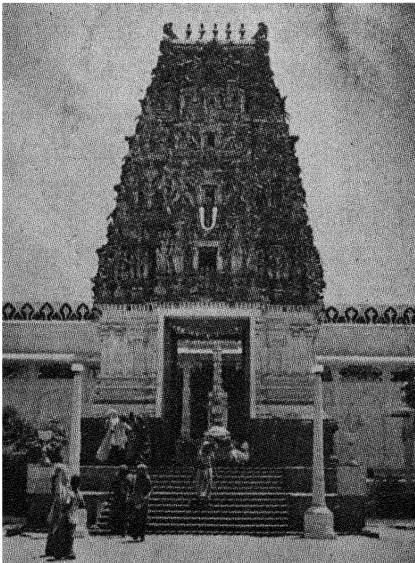
पुष्कर : श्री रंग मन्दिर

है। अजमेर से ७ मील दूर पर पुष्कर को सबसे बड़ा तीर्थ माना जाता है। पुष्कर में कई सरोवर हैं। पुष्कर के किनारों पर कई बड़े-बड़े घाट बने हैं। पुष्कर का प्रधान मन्दिर ब्रह्माजी का है।

नदी किनारे के तीर्थ

नदी किनारे के तीर्थ स्थानों में कई बहुत प्रसिद्ध हैं। गंगा, यमुना, गोदावरी और नर्मदा भारत की पूज्य नदियाँ हैं। गंगा नदी हिमालय की ऊँची चोटियों से निकलती है। इस नदी का जल पवित्र उज्ज्वल रहता है। यह जल कभी बिगड़ता नहीं, पहाड़ों पर होने वाली अनेक जड़ी-बूटियों के प्रभाव से गंगा के जल में बहुत से गुण आ गये हैं। उससे शरीर निरोग रहता है। गंगा के किनारे पर कई तीर्थ स्थान हैं। हरिद्वार, कनखल, गढ़ मुक्तेश्वर, राजघाट, प्रयाग, काशी, सागर संगम प्रसिद्ध हैं।

अयोध्या—सात पुरियों में से अयोध्या भी एक है। यह भगवान राम की जन्म-भूमि है। इसलिए सारे भारत का प्रसिद्ध तीर्थ है। लखनऊ से सीधे अयोध्या को रेल जाती है। यह सरयू नदी के किनारे पर है। यहाँ साधु-संन्यासी अधिक रहते हैं। यहाँ साल में एक बार बहुत बड़ा मेला होता है। सरयू नदी के किनारे कुछ अच्छे और पक्के घाट बने हुए हैं। अयोध्या में श्रीराम के जीवन से सम्बन्ध रखने

अयोध्या : हनुमान गढ़ी का मन्दिर

वाले कई स्थान हैं। अयोध्या के आसपास कई देखने योग्य स्थान हैं। यहाँ कुछ बड़े मंदिर हैं और श्रीराम के जन्म, निवास आदि से सम्बन्ध रखने वाले स्थान हैं। कनक-भवन अयोध्या का खास मन्दिर है। हनुमान गढ़ी एक दूसरा प्रसिद्ध मन्दिर है। यह स्थान एक ऊँचे टीले पर बना है। ६० सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद हनुमान जी का मन्दिर है। इसके साथ नया घाट, राम-कोट, और तुलसीचौरा भी देखने के स्थान हैं। तुलसीचौरा में ही तुलसीदास ने रामायण लिखना आरम्भ किया था।

गढ़ मुक्तेश्वर—बरेली-दिल्ली लाइन पर मुरादाबाद के पास का एक प्रसिद्ध स्थान गढ़ मुक्तेश्वर है। कार्तिक मास की पूर्णिमा को यहाँ एक बड़ा मेला लगता है। भारत-वर्ष के सुदूरस्थ स्थानों के यात्री यहाँ गंगा स्नान करने आते हैं। प्राचीन काल में गढ़ मुक्तेश्वर पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर का एक मुहल्ला था। यहाँ मुक्तेश्वर नाथ का शिव मंदिर है जो गंगा तट से १ मील दूर है। इस मंदिर के भीतर नृगकूप है। मन्दिर के पास ही बन में एक प्राचीन शिवलिंग है जिसे झारखण्डेश्वर शिवलिंग कहते हैं। गंगा जी के कई प्रसिद्ध मंदिर और ८० सती स्तम्भ हैं। यह सब टूटी-फूटी दशा में है।

प्रयाग—प्रयाग को तीर्थों का राजा माना जाता है। यहाँ गंगा-यमुना दोनों नदियाँ मिल जाती हैं। यहाँ हर साल माह के महीने में मेला होता है। १२ वर्ष बाद कुम्भ पड़ता है। उस समय सारे भारत के यात्री और साधु लोग यहाँ आते हैं और गंगा में स्नान करते हैं। इलाहाबाद (प्रयाग) को भारत के सभी स्थानों से रेलें आती हैं। प्रयाग के तीर्थों में अक्षयवट मुख्य है। यहाँ किले के भीतर धरती के नीचे एक मंदिर है। उस मंदिर में बहुत से देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं। यहाँ भारद्वाज आश्रम प्रसिद्ध स्थान है।

काशी—गंगा के किनारे काशी एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। काशी बनारस का पुराना नाम है। काशी को संसार का सबसे पुराना नगर माना जाता है। इसका वेदों में भी उल्लेख है। धर्म पुस्तकों में इसको शिव की नगरी कहा गया है। यहाँ गंगा के किनारे बहुत से सुन्दर घाट हैं। श्री विश्वनाथ जी का मन्दिर यहाँ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है। काशी की परिक्रमा ४७ मील की
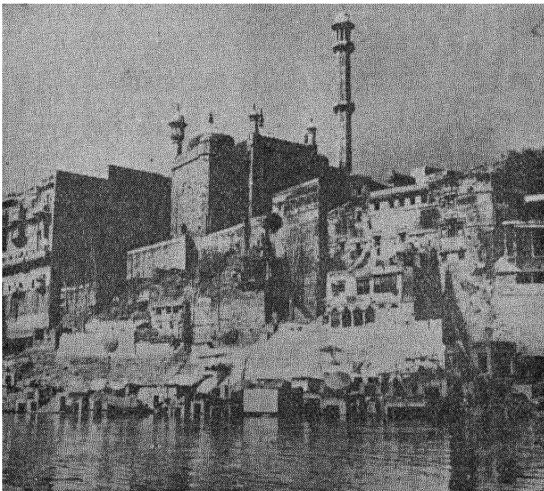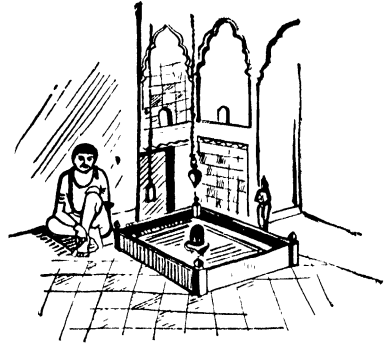
काशी : पञ्च गंगा घाट

है। रामनगर, सारनाथ, चन्द्रावती यहाँ समीप के स्थान हैं।

गंगा सागर—कलकत्ते से यात्री जहाजों में गंगा सागर

जाते हैं। गंगा सागर द्वीप कुछ ही मीलों का एक द्वीप है। आजकल वहाँ कोई आबादी नहीं है। कुछ थोड़े से साधु लोग रहते हैं। इस स्थान में दो-चार मंदिर हैं। विशालाक्षी का मन्दिर प्रसिद्ध है। गंगा सागर का मेला मकर संक्रान्ति पर लगता है और पांच दिन तक रहता है। यहाँ समुद्र में स्नान किया जाता है। समुद्र की पूजा भी की जाती है।

मथुरा : विश्राम घाट

मथुरा—गंगा की तरह यमुना के किनारे पर भी तीर्थ हैं। यमुना तट का सबसे बड़ा तीर्थ मथुरा है। मथुरा का दूसरा नाम मधुवन है। यहाँ श्रीकृष्ण ने जन्म लिया था। मथुरा में जमुना के किनारे २४ बड़े घाट हैं। विश्राम घाट इनमें मुख्य है। मथुरा के चारों ओर चार शिव के मंदिर हैं। मथुरा में कई विशाल मंदिर हैं। यहाँ का सबसे बड़ा मंदिर द्वारिकाधीश जी का मंदिर है। मथुरा से ६ मील उत्तर की ओर वृन्दावन है। गोकुल, महावन, नंदगाँव, बरसाना, गोवर्धन यहाँ के प्रसिद्ध स्थान हैं।

वृन्दावन—मथुरा से ६ मील दूर पर वृन्दावन है। मथुरा-वृन्दावन मार्ग पर बिड़ला मंदिर दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त यहाँ कालियहृद, कालिय मर्दनकर्ता बांके बिहारी का मंदिर, शृंगारवट आदि दर्शनीय मंदिर हैं। यहाँ सारे देश से यात्री इस पवित्र स्थान की यात्रा को आते हैं।

दक्षिण में नर्मदा नदी के किनारे पर भी कई प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हैं। इनमें शूलपाणि या सुरपानेश्वर विशेष रूप

मथुरा : द्वारकाधीश मन्दिर का प्रवेश द्वार

से प्रधान हैं। ये स्थान दूर-दूर तक फैले, घने वनों में है। इन वनों में आना-जाना कठिन है। यहाँ की यात्रा करने के लिए लोगों को साथ खोजना पड़ता है। यहाँ जाने वाले यात्री मेले के समय पर ही आते हैं। नर्मदा नदी के दक्षिणी किनारे पर यह स्थान है। यहाँ शूल-पाणि शिव का मंदिर है। भरुच नर्मदा तट का दूसरा

प्रसिद्ध तीर्थ है। बम्बई-बड़ौदा लाइन पर एक स्टेशन है। इसे भृगुक्षेत्र भी कहते हैं। यहाँ भृगु का आश्रम था। यहाँ नर्मदा के किनारे बहुत से मन्दिर हैं। रेवा-सागर संगम इस नदी का एक और तीर्थ है। विमलेश्वर से नाव में बैठकर रेवा-सागर संगम की परिक्रमा होती है। नर्मदा का दूसरा नाम रेवा है। यहाँ समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें उठती हैं। यहाँ एक लाइट हाउस है और हरिधाम नाम का प्रसिद्ध स्थान है।

कुंभकोणम्—कुंभकोणम् दक्षिण भारत का प्रधान तीर्थ है। यहाँ १२ वर्ष बाद कुम्भ का मेला लगता है। यह नगर कावेरी के किनारे पर है। यहाँ कई मन्दिर हैं। यहाँ महामघम् एक बड़ा सरोवर है। पुराणों में इस नगर का नाम काम कोष्णीपुरी है।

श्रीरंगम्—त्रिचिनापली और श्रीरंगम् दो स्टेशन हैं। त्रिचिनापली नगर है। श्रीरंगम् तीर्थ है। श्रीरंगम् एक द्वीप है। त्रिचिनापली के गणेश मन्दिर से उतर कर कावेरी के पुल से श्रीरंगम् द्वीप में पहुँचते हैं। इस द्वीप पर ४४ एकड़ के लगभग घेरे का एक मंदिर है। इतने घेरे में भारत का कोई दूसरा मंदिर नहीं है। यही श्रीरंग का मन्दिर है। यह मन्दिर सात परकोटे में है। पूस के महीने में इस मन्दिर में एक बहुत बड़ा मेला होता है।

दक्षिण भारत के कुछ तीर्थ

भारत बहुत बड़ा देश है। जलवायु सब स्थानों पर एक सी नहीं है। जलवायु के अन्तर से रहन-सहन में अन्तर पड़ जाना स्वाभाविक ही है। दक्षिण भारत में पुरानी परम्परा बिगड़ी नहीं। वहाँ के निवासी बड़े धर्मात्मा हैं। यहाँ संस्कृत के बड़े-बड़े विद्वान हैं। उत्तर भारत के रहने वाले श्री रामेश्वरम्, श्रीरंगनाथ और श्री जगन्नाथ के मंदिरों को देखने के लिए लालायित रहते हैं। दक्षिण भारत के रहने वाले विश्वनाथ, अयोध्या, वृन्दावन, बदरीनाथ जाने के इच्छुक रहते हैं। दक्षिण भारत में अनेक तीर्थ हैं। दक्षिण में मंदिर अधिक हैं। इसलिए दक्षिण को मंदिरों का देश कहते हैं। दक्षिण के मंदिरों की यात्रा के लिए जो लोग जाते हैं उन्हें अधिकतर पण्डे नहीं मिलते। रामेश्वर और गोकरण में पण्डे हैं। यहाँ के मंदिर बहुत बड़े-बड़े हैं। मंदिर परकोटो में होते हैं। हर मंदिर में एक या कई ऊँचे गोपुर होते हैं। ऋष्यमूक पर्वत, पम्पासर, शिवगंगा, मल्लिकार्जुन, काँची, कुम्भकोणम्, श्रीरंगम्, रामेश्वरम्, मीनाक्षी, कन्याकुमारी, हाटकेश्वर, द्वारकाधाम आदि इस ओर के प्रसिद्ध तीर्थ हैं।

ऋष्यमूक—किष्किन्धा से विरुपाक्ष मंदिर तक सड़क जाती है विरुपाक्ष मंदिर में भुवनेश्वरी देवी की मूर्ति है। इस मंदिर के सामने से ऋष्यमूक तक सड़क गई है। यहाँ पर तुंगभद्रा नदी बहती है। यहाँ एक चक्रतीर्थ है। पहाड़ी के नोचे श्रीराम मंदिर है। इस मंदिर में राम, लक्ष्मण,

सीता की मूर्तियाँ हैं। स्फटिक शिला, विट्ठल मंदिर और पम्पा सरोवर यहाँ के अच्छे स्थान हैं।

भुवनेश्वर—कटक से १८ मील दूर भुवनेश्वर स्टेशन है। भुवनेश्वर काशी के समान शिव मंदिरों का नगर है। यहाँ इतने मन्दिर हैं कि उनके नाम याद रखना भी मुश्किल है। इनमें से मुख्य एवं दर्शनीय हैं—रामेश्वर, ब्रह्मेश्वर, मेघेश्वर, राजा-रानी मंदिर तथा अनन्त वासुदेव मंदिर आदि।

भुवनेश्वर का मंदिर
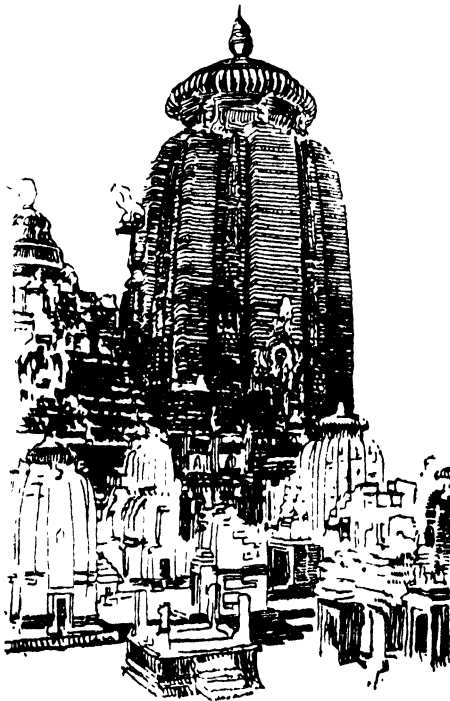
मैसूर—मैसूर भारत का एक सुप्रसिद्ध नगर है। यहाँ चामुण्डा पर्वत के ऊपर चामुण्डा देवी का विशाल मंदिर है। मंदिर को जाने के लिए मोटर का भी मार्ग है। पर्वत-

शिखर पर एक घेरे में महिषासुर की ऊँची मूर्ति बनी है। चामुण्डो देवी के मंदिर के पास एक शिव मंदिर भी है। यहाँ वृन्दावन बाग देखने योग्य है।

शिवगंगा—मैसूर राज्य में शिवगंगा है। यह यहाँ का सबसे बड़ा तीर्थ है। यहाँ ककुदगिरि पहाड़ है। यहाँ एक गुफा में मंदिर है। लगभग सब मंदिर गुफाओं को काटकर बनाये गये है। अम्बा देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। पहाड़ पर पाताल गंगा, चक्रतीर्थ आदि स्थान और कुछ कुण्ड हैं।

मल्लिकार्जुन—श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन तीर्थ है। मनमाड-कांचोगुड़ा लाइन के सिकन्दराबाद स्टेशन से एक लाइन द्रोणाचलम तक जाती है। इस लाइन पर कर्नूल टाउन से ७७ मील पर श्रीशैल है। इस शैल की चोटी पर पेड़ नहीं हैं। मन्दिर के बाहर पीपल और पाकर का जुड़ा हुआ एक पेड़ है। यहाँ पार्वती का मंदिर है। पाताल गंगा, अम्बाजी, महानदो आदि यहाँ आस-पास के देखने योग्य स्थान हैं।

काँचो—मद्रास-धनुषकोटी लाइन पर मद्रास से ३५ मील पर चेंगलपुट स्टेशन है। चेंगलपुट से मोटर पर कांची को जाते हैं। मुख्य नगर काँजीवरम् है। इसके दो भाग हैं—शिवकाँची तथा विष्णु-काँची। काँची में गर्मी में कुएँ सूख जाते हैं। यहाँ एक सर्व तीर्थ सरोवर है और एका-मरेश्वर का मंदिर है। इस

काँची : एकाम्रनाथ मन्दिर

मंदिर में थोड़ी दूर पर कामाक्षी का मंदिर है। कहा जाता है
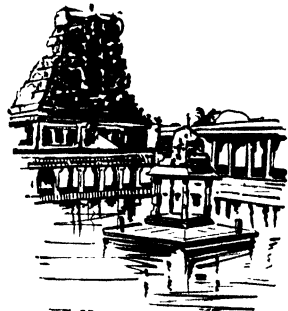
यह मंदिर शंकराचार्य ने बनवाया। विष्णु काँची में १८ विष्णु मंदिर बताये जाते हैं।

रामेश्वरम् : मन्दिर के घेरे में मांधव कुण्ड

रामेश्वरम्—मद्रास से रामेश्वरम् तक रेल की लाइन जाती है। यहाँ श्रीरामचन्द्र जी की सेना ने समुद्र पर पुल बाँधा था। यहाँ लक्ष्मण तीर्थ सीतातीर्थ, रामतीर्थ स्थान हैं जहाँ यात्री स्नान करते हैं। यहाँ लगभग बीस बीघे के घेरे में रामेश्वरम् मंदिर है। इस मंदिर के आगे सुनहला जड़ा हुआ खंभा है। फाटक के भीतर बहुत बड़ा आंगन है। स्फटिक लिंग, गन्धमादन, राममंदिर आदि यहाँ के मुख्य स्थान हैं।

धनुषकोटी—समुद्र के किनारे पर पवित्र रामसेतु है। यहाँ पर धनुषकोटी प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ यात्री एक दिन में ३६ बार स्नान करते हैं। रेल से रामेश्वरम् आकर फिर धनुषकोटी जाना पड़ता है। धनुषकोटी में मीठा पानी नहीं मिलता। यहाँ श्रीराम का मंदिर है। इसके पास ही ८ मील की दूरी पर समुद्र के बीच में टापू पर विभीषण तीर्थ है।

मीनाक्षी—त्रिचिनापली-तूतीकोरन लाइन पर मदुरा नगर है। इसी नगर के बीच में मीनाक्षी का मंदिर है। यह मंदिर बहुत सुन्दर बना हुआ है। इसमें कई मण्डप और सरोवर हैं। इस नगर में साल भर उत्सव होते हैं। वसन्तोत्सव में मीनाक्षी की पूजा होती है।

कन्या कुमारी—कावेरी में स्नान करने के बाद यात्री कन्या तीर्थ में स्नान करते हैं। कन्या कुमारी भारत की अन्तिम सीमा है। चैत्र मास की पूर्णिमा को यदि बादल न
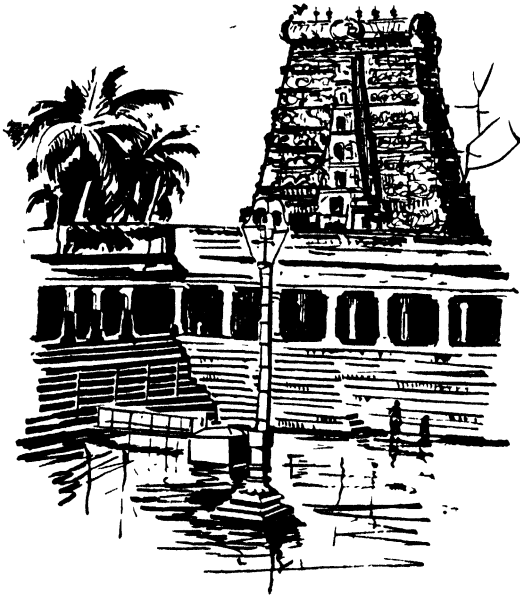
मीनाक्षी मंदिर

हो तो यहाँ से बंगाल की खाड़ी में निकलता चाँद और अरब सागर में डूबता हुआ सूरज दिखाई पड़ता है। स्नान घाट के पास छोटा-सा एक गणेश जी का मंदिर है। यहाँ समुद्र के किनारे लाल तथा काली रेत है। शंख, सीपी आदि यहाँ मिलते हैं।

द्वारका : गोपी तालाब

द्वारकापुरी—द्वारका की सात पुरियों में गणना है। श्रीकृष्ण की यह राजधानी चारों धामों में एक धाम भी है।

यह नगरी काठियावाड़ में पश्चिमी समुद्र तट पर है।
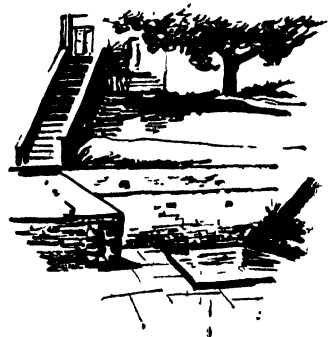
पश्चिम रेलवे की अहमदाबाद-दिल्ली के मेहसाणा स्टेशन से एक लाइन सुरेन्द्रनगर जाती है। सुरेन्द्रनगर-ओखा लाइन पर द्वारका स्टेशन है। द्वारका स्टेशन से द्वारकापुरी (गोमती द्वारका) एक मील है। यहाँ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर श्री रणछोड़राय का मन्दिर है। इसी मंदिर को द्वारकाधीश का मंदिर कहते हैं। द्वारका के पास गोमती नदी, चक्रतीर्थ, गोपी सरोवर, ऋषि तीर्थ आदि प्रसिद्ध तीर्थ हैं।

बौद्धों के तीर्थ

महात्मा बुद्ध संसार के महान व्यक्ति थे जिन्होंने राज्य को छोड़कर जीवधारियों के सुख की खोज में अपना जीवन लगाया। वे शान्ति के पुजारी थे। उनके धर्म को मानने वाले लोगों के चार ही बड़े तीर्थ हैं। १. बुद्ध का जन्म जहाँ हुआ। २. बुद्ध को ज्ञान जहाँ मिला। ३. जहाँ से बुद्ध ने अपना उपदेश आरम्भ किया। ४. जहाँ बुद्ध की मृत्यु हुई।

लुम्बिनी—यहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था। गोरखपुर से नौतनवां जाने के बाद १० मील की दूरी पर यह स्थान है। यह स्थान नेपाल राज्य में है।

बुद्ध गया—गया स्टेशन से ७ मील की दूरी पर यह स्थान है। तपस्या करते हुए यहाँ बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था।

सारनाथ—बनारस से भटनी जाने वाली लाइन पर यह स्थान बनारस से ६ मील दूर है। यहीं से बुद्ध ने अपना उपदेश आरम्भ किया था। यह एक प्रसिद्ध स्थान है। विदेशों के लोग भी यहाँ आते हैं।
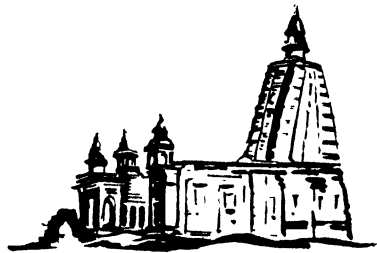
सारनाथ का मन्दिर

कुशीनगर—यहाँ बुद्ध का निर्वाण हुआ। गोरखपुर से ३० मील दूर देवरिया सदर स्टेशन है। यहाँ से कुशीनगर २१ मील है। इनके अतिरिक्त कौशाम्बी, साँची, श्रावस्ती और पेशावर भी प्रसिद्ध तीर्थ हैं। कौशाम्बी में एक स्तूप के नीचे बुद्ध के केश और नख रक्खे हैं। पेशावर में कनिष्क राजा का बनवाया हुआ एक स्तूप है जिसमें बुद्ध की अस्थियाँ मिली हैं।

जैनियों के तीर्थ

बौद्धों की तरह भारत में जैनियों के भी कई तीर्थ स्थान हैं। जैन दो प्रकार के होते हैं—श्वेताम्बर और दिगम्बर। बहुत से तीर्थ ऐसे हैं जिन्हें दोनों मानते हैं। अयोध्या, श्रावस्ती, कौशाम्बी, वाराणसी, चन्द्रपुर, हस्तिनापुर, मथुरा, अहिच्छत्र, राजगृह, गिरनार, कारकल, महावीरजी, बड़पानी

आबू : जैन मंदिर का दृश्य

देवगढ़, कुण्डलपुर तथा सोनागिरि आदि दिगम्बरों के प्रसिद्ध तीर्थ हैं। इनमें से कई तो तीर्थंकरों के जन्म स्थान हैं और

कई में बड़े-बड़े मंदिर हैं। खजुराहो में ३१ जैन मंदिर हैं। देवगढ़ में, जो झाँसी जिले के ललितपुर से १९ मील दूर है, अनेक प्राचीन मंदिर हैं। यहाँ २०० शिलालेख हैं। इसी तरह के श्वेताम्बर जैनियों के भी कई प्रसिद्ध स्थान हैं। मालवा में कई मूर्तियाँ हैं। पंजाब में नगरकोट, कांगड़ा जैनियों के तीर्थ हैं। सौराष्ट्र में कई स्थान ऐसे हैं जहाँ अनेक देवालय और प्रतिमाएँ हैं। गुजरात में सबसे अधिक जैन मंदिर हैं। राजस्थान में आबू जैनियों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। सारे भारत में जैन धर्म वालों के तीर्थ स्थान पाये जाते हैं। उनमें से बहुत से स्थान ऐसे हैं जहाँ कोई मेला नहीं होता और यात्रायें नहीं की जातीं।

मुसलमानों के तीर्थ

हिन्दुओं की तरह मुसलमानों के भी भारत में कई पवित्र स्थान हैं। हजारों की संख्या में हर साल मुसलमान लोग वहाँ जाते हैं। ये लोग वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं। ईश्वर की भक्ति के गीत गाते हैं जिन्हें क़व्वाली कहते हैं। कई दिनों तक मेला रहता है। यह स्थान हैं अजमेर शरीफ़, दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, और रुड़की के पास पीरान-कलियर। पीरानकलियर में कई दिनों तक उर्स होता है। औलिया की दरगाह में भी कई दिनों तक उर्स होता है। मुसलमानों के इन स्थानों को हजारों की संख्या में हिन्दू भी जाते हैं और मेले में भाग लेते हैं। ये स्थान मुसलमानों

अजमेर : दरगाह का दृश्य

के बड़े आदमियों और पहुँचे हुए पीरों की याद में बने हैं। हिन्दू-मुसलमान दोनों समान रूप से दान देते हैं और अपने मंगल की कामना करते हैं।

अजमेर शरीफ मुसलमानों का सबसे प्रसिद्ध स्थान है। हर साल बहुत बड़ी संख्या में लोग यहाँ आते हैं। कहा जाता है कि बादशाह अकबर दिल्ली से पैदल चलकर अजमेर शरीफ़ गया और वहाँ दरगाह पर उसने पुत्र की कामना की। बाद को अकबर के पुत्र हुआ। उसका नाम अकबर ने शाहज़ादा सलीम रक्खा। मुसलमानों के इन पाक स्थानों के विषय में और भी कहानियाँ प्रचलित हैं। इन कहानियों में जो कुछ भी सच्चाई हो किन्तु वे यह तो प्रकट करती ही हैं कि मज़ारों और दरगाहों की लोग पूजा करते हैं और उन पर उनका बड़ा विश्वास है।

सिक्खों के तीर्थ

भारत में सिक्खों के भी कई पवित्र स्थान हैं। सिक्ख लोग गुरु नानक के भक्त होते हैं। गुरु नानक हिन्दुओं में भी उतनी ही आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं जितने सिक्खों में। इसलिए सिक्खों के पवित्र स्थानों को हिन्दू भी मानते हैं। भारत में सिक्खों का सबसे बड़ा स्थान अमृतसर है। अमृतसर का सोने का मंदिर सारे भारत में प्रसिद्ध है।

स्वर्ण मंदिर, अमृतसर

इसके अलावा जहाँ भी गुरुद्वारे हैं वे सब पूजा के स्थान हैं। सिक्ख लोग गुरुद्वारों, गुरु की जन्म-भूमि तथा उनसे सम्बन्धित सभी स्थानों को पाक मानते हैं।

तीर्थों का महत्त्व

प्रत्येक भारतीय के जीवन में तीर्थों का महत्त्व है। धर्म ग्रन्थों की तरह तीर्थ उनके जीवन का नियमन करते हैं। वे उसे अपने आवश्यक कार्यों को पूरा करने का बल देते हैं। मोक्ष प्राप्ति प्रत्येक हिन्दू का सबसे बड़ा लक्ष्य है। तीर्थ मोक्ष का सबसे सरल साधन माना गया है। इसलिए जीवन में तीर्थों का बड़ा महत्त्व है। जीवन तीर्थ यात्रा के बिना पूर्ण नहीं माना जाता। तीर्थों में स्नान और पिण्ड-दान किये बिना पुरखों को मुक्ति नहीं मिलती। हिन्दू परिवार के समस्त संस्कार तीर्थों से जुड़े हुए हैं। मुण्डन तीर्थ स्थान में होता है। विवाह के पश्चात् तीर्थ यात्रा का विधान है और मरने के बाद मृतक शरीर की भस्म को तीर्थ स्थान में ले जाना पड़ता है। इससे यह साफ है कि जीवन में तीर्थों का बड़ा महत्त्व है। अपने जीवन के सारे काम पूरे कर लेने के बाद मनुष्य चारों धाम और सातों पुरियों की तीर्थ यात्रा करता है तो समाज में वह बड़ा धर्मात्मा और आदरणीय माना जाता है। तीर्थ-यात्रा से मनुष्य के जीवन में सदाचार और सद्भाव का उदय होता है। इसके अलावा वह अनेक प्रान्तों के तीर्थ यात्रियों से मिलकर अपने जीवन और विचारों को व्यापक बनाता है। देशाटन का जो महत्व है वह तीर्थ यात्रा से पूरा हो जाता है। तीर्थों के गौरव और उसकी धार्मिक प्रतिष्ठा से देश के सामूहिक गौरव का ज्ञान होता है और इससे मनुष्य का जीवन महान बनता है।

तीर्थों का सांस्कृतिक महत्त्व भी अधिक है। किसी देश

का रहन-सहन, रीति-रिवाज, मनोरंजन के ढंग, पहनावा आदि सब देश की संस्कृति कहलाते हैं। पुराने तीर्थों में पुराने समय के जीवन की भाँकी देखने को मिलती है। तीर्थों के पुजारी और तीर्थों के प्रबन्धक पुरानी प्रथा और पुरानी परम्परा को आज तक सम्हाले हुए हैं। आज तीर्थों में जाकर युगों पुरानी सभ्यता का दर्शन मिल जाता है। कुछ तीर्थ स्थान तो विशेष प्रकार की संस्कृति के केन्द्र बन गए। काशी एक तीर्थ है। वहाँ जाकर लोगों ने विद्याध्ययन अच्छा माना। काशी प्राचीन काल में विद्या का प्रधान स्थान था और दूर-दूर से लोग धार्मिक अध्ययन के लिए काशी आया करते थे। तीर्थों में देश के प्रत्येक स्थान से यात्री आते हैं। उन्हें देखकर और उनके साथ रहकर यात्री को अपने देश के अलग-अलग भागों की संस्कृति का पता चल जाता है। एक-दूसरे की संस्कृति से लोग प्रभावित होते हैं और उसे ग्रहण कर लेते हैं। प्रयाग के कुम्भ मेले में देश के बड़े-बड़े धनी, बड़े-बड़े विद्वान, बड़े-बड़े गायक, चित्रकार, साधु-संन्यासी, व्यापारी, स्त्री-पुरुष एकत्र होते हैं। प्रत्येक प्रान्त की अपनी-अपनी विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं। इनसे अलग-अलग स्थानों के लोगों की संस्कृति का आभास मिलता है। तीर्थों के द्वारा भारत की पुरानी धार्मिक संस्कृति अब तक सुरक्षित है।

हिन्दू धर्म में तीर्थ यात्रा का अधिक महत्त्व है। प्रत्येक हिन्दू तीर्थों में जाने के लिए लालायित रहता है। हिन्दुओं के धर्म ग्रंथों में तीर्थों की महिमा का वर्णन किया गया है। वेदों और धर्म शास्त्रों में तीर्थों की महिमा का लेख है। महाभारत में कहा गया है कि तीर्थ यात्रा करने से बहुत पुण्य होता है। जो तीर्थ नहीं जाता, जो उपवास नहीं करता, वह दरिद्र होता है। हिन्दुओं के धर्म ने तीर्थ स्थानों को

बहुत बड़ा माना है। रेवा के किनारे तपस्या का फल होता है। गया में पिण्डदान से फल होता है। कुरुक्षेत्र में दान करके बड़ा फल होता है। काशी में मरने से स्वर्ग मिलता है। ग्रंथों के इन कथनों से यह पता चलता है कि तीर्थों का धार्मिक महत्त्व बहुत है। हिन्दुओं का धर्म यह कहता है कि मन लगाकर संयम से तीर्थ यात्रा करने पर मोक्ष मिलता है और जो लोग सांसारिक सुख की कामना से तीर्थ यात्रा करते हैं उन्हें अपना मनचाहा फल मिलता है। तीर्थ स्थान धर्म ग्रंथों के समान हैं। वहाँ जाकर पुण्य कर्म करके मनुष्य मानो धर्म ग्रंथों की आज्ञा का पालन कर लेता है। जो तीर्थ नहीं करता वह सच्चा धार्मिक नहीं कहलाता है। इससे यह पता चलता है कि तीर्थों का धार्मिक महत्त्व सबसे अधिक है। तीर्थों के पवित्र स्थान के प्रभाव से मन पवित्र होता है और मनुष्य के मन में धर्माचरण की इच्छा होती है। रामायण में उल्लेख है कि निषाद जैसे लोगों का मन राम के निवास से पवित्र हुई चित्रकूट की भूमि पर बदल गया। अनेक धर्म-कार्य बिना तीर्थ यात्रा के पूरे नहीं माने जाते। शरीर और मन की पवित्रता धर्म मानी गई है। तीर्थ स्थानों पर इस पवित्रता का अधिक अवसर मिलता है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों और विद्वानों ने तीर्थ स्थानों में रहकर हिन्दू धर्म की अनेक गम्भीर बातों का रूप स्पष्ट किया। बहुत से तीर्थ अवतार और देवताओं से सम्बन्धित हैं। वे तीर्थ प्रत्येक हिन्दू तीर्थयात्री को अपने देवताओं की याद दिलाते रहते हैं। इससे उसका विश्वास धर्म पर बढ़ता रहता है। यदि तीर्थ यात्रा का यह धार्मिक महत्त्व न होता तो आज हिन्दू धर्म का रूप न जाने कैसा होता। तीर्थ भारत की धर्म-धरोहर के रखवाले हैं।

इसके साथ ही सब मतों के मानने वालों और तीर्थ यात्रा

पर विश्वास न करने वालों के जीवन, संस्कृति, धर्म पर तीर्थों का प्रभाव पड़ता है। अनेक लोग तीर्थों में एकत्र होते हैं। उनमें से कुछ को व्यवसाय का लाभ होता है। प्रतिवर्ष तीर्थ स्थान के लेन-देन से उनकी आय बढ़ती है और वे धनी बन जाते हैं। बहुत से लोग तीर्थों में जाकर और लोगों की संस्कृति से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार देश के भिन्न-भिन्न लोगों के रीति रिवाजों पर बराबर कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ता रहता है। अनेक व्यक्ति जो धर्म को नहीं मानते धर्म पर विश्वास करने लग जाते हैं और धर्म के भीतर जो अनेक ढकौंसले आ गये हैं उनको दूर कर देते हैं। समुदाय का प्रभाव व्यक्ति पर गहरा होता है। तीर्थ स्थान लोगों के जीवन को नई दिशा दिखाते हैं। उनमें सुधार करते हैं। वे लोगों को परस्पर विश्वास और सहयोग का पाठ पढ़ाते हैं।

लोगों के जीवन, धर्म, संस्कृति तथा आचार पर तीर्थों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। वे समाज की पुरानी परम्पराओं को याद दिलाते हैं। तीर्थों के प्रभाव से मनुष्य बुराई से घृणा करता है और ईमानदारी तथा सच्चाई का व्यवहार करता है। तीर्थों के कारण आज भी धर्म का रूप पहले जैसा बना है। अतिथि का सत्कार करना, सच बोलना, चोरी न करना यह हमारी पुरानी सभ्यता और धर्म के लक्षण हैं। तीर्थ स्थानों में जाकर व्यक्ति अपने धर्म तथा पुरानी संस्कृति के गुणों की याद करता है। आज हिन्दू जीवन में जो पवित्रता और पुरानी परम्परा के लिए रुचि पाई जाती है वह सब हमारे तीर्थों का प्रभाव है। हरिद्वार, प्रयाग, जगन्नाथपुरी आदि बड़े-बड़े तीर्थों में दूर-दूर के लोग आकर जमा होते हैं। उन लोगों की भाषाएँ अलग-अलग होती हैं। खान-पान और पहनावे में बड़ा अन्तर होता है। लेकिन कई दिनों तक साथ रहकर उनके मन में कुछ

ऐसा अनुभव होने लगता है कि कोई जगह ऐसी भी है जहाँ हम सब एक हैं। वे आपस में एक दूसरे की विशेषताओं पर मुग्ध हो जाते हैं। वे मित्रता के ऐसे सूत्र में बंध जाते हैं जो आगे आने वाली पीढ़ियों तक अटूट बना रहता है। इस प्रकार तीर्थ यात्रा दो अलग भागों में रहने वाले व्यक्तियों के बीच एकता का सम्बन्ध पैदा करती है। वे समझने लगते हैं कि हम सब का लक्ष्य एक है। दूर-दूर रहने पर भी हम एक दूसरे के समीप हैं।

तीर्थ यात्रा से लाभ

बहुत पुराने समय से भारत में तीर्थ यात्रा होती आई है। हिन्दुओं की धर्म पुस्तकों में तीर्थों की महिमा का वर्णन है। तीर्थों को जाने से पुण्य लाभ होता है। भिन्न-भिन्न जातियों के लोगों के दर्शन होते हैं। विभिन्न प्रकार के रहन-सहन देखने को मिलते हैं। यात्रियों को अनेकता में एकता का आभास होता है। लोगों के अलग-अलग समाजों को देखकर यात्री को अपने देश की विशालता का ज्ञान होता है। जो लोग वहाँ एकत्र होते हैं वे आपस में मेल-जोल से रहते हैं, और मेले में पैदा की हुई मैत्री घर को लाते हैं। इससे उनके समाज का विकास होता है। लोगों में परस्पर प्रेम भाव बढ़ता है। साथ ही ज्ञान की भी प्राप्ति होती है। भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों में तीर्थ हैं। इन स्थानों की जलवायु, भूमि और हरियाली एक सी नहीं है। इस विविधता से यात्री को देश प्रेम का सन्देश मिलता है। अपने घर में रहते-रहते व्यक्ति कूपमण्डूक हो जाता है। तीर्थ यात्रा से उसे देश में भ्रमण का अवसर मिलता है। इस भ्रमण से उसे बहुत-सी नई बातें ज्ञात होती हैं। इस प्रकार से तीर्थ यात्रा से हमें नीचे लिखे लाभ होते हैं :—

ज्ञान-वृद्धि—तीर्थों में जाकर लोग भजन, गायन, कीर्तन, पठन-पाठन और महात्माओं के उपदेश सुनते हैं। इनसे उनका ज्ञान बढ़ता है। देश के दूर-दूर भागों से आये हुए लोगों को देखकर उनके रहन-सहन, आचार-व्यवहार का ज्ञान होता है। उनके सद्गुणों को यात्री अपना लेता है।

अपने दुर्गणों को छोड़ देता है।

सहयोग की शिक्षा—तीर्थों में जाकर यात्री को सहयोग और सहकारिता का ज्ञान मिलता है। अलग-अलग देशों के आये हुए लोग, एक दूसरे की सहायता करते हैं और साथ-साथ उठते-बैठते हैं। छोटे-बड़े सभी जातियों के लोग मिल-जुल कर बैठते हैं। तीर्थ यात्रा से सच्चे समाजवाद और सच्ची समता की शिक्षा मिलती है।

अनेकता में एकता—तीर्थों में यात्री कितने ही प्रकार के लोगों को देखता है, जिनके व्यवहारों और रहन-सहन की विधियों में अनेकता होती है। सब लोग एक से नहीं होते। वहाँ देखने से ज्ञात होता है कि देश में अनेक जातियाँ हैं। अनेक प्रकार के समाज हैं। और अनेक भाँति के रहन-सहन हैं। सब के अपने-अपने विचार हैं और अपनी-अपनी सभ्यताएँ हैं किन्तु यह सब-कुछ होते हुए भी वे सब एक ही देश के निवासी हैं। यात्रियों को ज्ञात होता है कि उनका देश भारत अखंड है। उन्हें यह भी आभास होता है कि इतने प्रकार के लोग तीर्थ में एक ही भाव लेकर एकत्र होते हैं। उनकी सब की यात्रा की राहें अलग-अलग हैं। किन्तु मंजिल एक है। अलग देशों में रहने वाले, अलग-अलग भाषा बोलने वाले नर-नारियों को एकता के धागे में बाँधने का काम तीर्थ करते हैं।

आत्म-विश्वास और संयम—तीर्थ यात्रा में मनुष्य भाँति-भाँति की कठिनाइयों का सामना करता है और अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। तीर्थों में जाकर अपनी देखभाल अपने साथियों के साथ निवास के द्वारा उसका आत्म-विश्वास बढ़ता है। उसे अपना कार्य आप करने का साहस मिलता है। तीर्थों में विशेष प्रकार के नियम बन्धन के साथ रहना पड़ता है। वहाँ की सफाई, वहाँ के प्रबन्ध और वहाँ के

नियमों के अनुसार रहने से उसे संयम की आदत बन जाती है। चोरी न करना, पवित्रता से रहना, गंदी वस्तु न लेना, गुरुजनों तथा दीन-दुखियों की सेवा करना ये सब संयम की बातें उसके चरित्र में तीर्थ निवास से आ जाती हैं। वह समय से उठता, समय से भोजन करता, और समय से महात्माओं के उपदेश सुनता है।

पूर्वजों के गौरव का ज्ञान—तीर्थों में जाकर यात्री राम, कृष्ण, शिव, विष्णु, दुर्गा, महात्मा बुद्ध, महावीर अनेक ऋषि-मुनि और महान आत्माओं की प्रतिमाओं के दर्शन करता है। उसे यह ज्ञात होता है कि उसके पुरखे कितने महान थे। उन्होंने देश, समाज, व्यक्ति को सेवा तथा लाभ के लिए बड़े-बड़े काम किये। उन लोगों ने अपने देश के सुन्दर स्थानों को चुनकर वहाँ तीर्थों की स्थापना की। वे लोग कितने परिश्रमी और लगन वाले होते थे। देश के हर भाग को उन्होंने ऊँचा उठाने की कोशिश की।

देश प्रेम—तीर्थ यात्रा द्वारा यात्री को अपने देश के गौरव का ध्यान होता है। ऊँचे-ऊँचे पहाड़, फैले हुए मैदान, कलकल करती हुई नदियाँ और हरे-भरे खेत, यात्री को देश की विशालता का संकेत करते हैं। वह यह अनुभव करता है कि हमारा देश भारत भरा-पूरा देश है। वास्तव में हमारे देश को 'सोने की चिड़िया' ठीक ही कहा गया है। वह अपने देश से प्रेम करता है। तीर्थ यात्रा के बाद जब घर लौटता है तो उसे अपनी जन्मभूमि को देखकर बड़ा सुख होता है। जिन लोगों से तीर्थों में वह मिलता है उनके स्थानों की सुन्दरता का ज्ञान करके उसे अपने देश की सुन्दरता का बोध होता है। वह अपने देश और देशवासियों से प्रेम करना सीखता है।

जो व्यक्ति तीर्थ यात्रा नहीं करता, वह अंधे व्यक्ति के समान होता है। उसे अपने देश के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं होता। असल में तीर्थ यात्रा देश में भ्रमण करने का दूसरा नाम है। केवल भ्रमण करना सबको प्रिय नहीं होता। इसलिए हमारे पूर्वजों ने भ्रमण को बढ़ावा देने के लिए तीर्थ यात्रा को धर्म-कर्म बताया। हमारे यहाँ तीर्थ यात्रा बुढ़ापे का कर्म है। असल में तीर्थ यात्रा तो किशोर अवस्था से ही होनी चाहिए। शिक्षा का ज्ञान तीर्थ यात्रा द्वारा पूरा होता है। नवयुवकों को तीर्थ यात्रा में जो अनुभव होता है वे उससे अपने जीवन को लाभ पहुँचा सकते हैं। बुढ़ापे की तीर्थ यात्रा अलाभकारी विद्या के समान बेकार है। तीर्थ यात्रा से सब प्रकार के लाभ होते हैं। उसके द्वारा मनुष्य की आँखें खुलती हैं।

तीर्थों मे सुधार

संसार के हर पदार्थ में गुण और दोष दोनों हैं। उनको काम में लाने वाले आदमी की योग्यता इस में है कि वह दोषों से दूर रहता है और गुणों से लाभ उठाना चाहता है। आजकल के समय का प्रभाव है कि तीर्थों में भी कुछ दोष आ गये हैं। उनमें अब कुछ सुधार की आवश्यकता है। तीर्थों में बहुत से आदमी इकट्ठे होते हैं। जितनी स्वच्छता चाहिए उतनी स्वच्छता नहीं रह पाती। प्रत्येक तीर्थयात्री को यह ध्यान रखना चाहिए कि तीर्थ स्थान उसका अपना स्थान है। जिस स्वच्छता की आवश्यकता उसे है उतनी ही उसकी जरूरत और लोगों को भी है। सबके इस प्रकार आचरण करने से स्वच्छता का अभाव दूर हो सकता है। इसके अतिरिक्त प्रबन्ध करने वालों को भी इस ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। तीर्थों में कभी-कभी बीमारियाँ फैल जाती हैं। सरकार उनकी रोक-थाम का प्रबन्ध करती है। यात्री सरकार से सहयोग नहीं करते, यह खेद की बात है। कभी हैजे का टीका लगाना अनिवार्य होता है तो यात्री झूठ का सहारा लेकर उससे बचने का प्रयत्न करते हैं। इससे रोग की रोक-थाम में बाधा पड़ती है। बाहर की गन्दी चीजों को नहीं खाना चाहिए। जिन स्थानों में पण्डे मिलते हैं कभी-कभी वहाँ यात्री को कष्ट मिलता है। पण्डे मनमाना धन लेना चाहते हैं। पण्डों की भीड़ यात्री को घेर लेती है। पण्डा प्रथा के कुछ लाभ भी हैं। पण्डे एक अनजान स्थान में यात्री का पथ-प्रदर्शन करते हैं। पण्डों में सच्ची सेवा की भावना

ग्रानी चाहिए। पण्डों ग्रौर पुरोहितों के संघों की स्थापना के द्वारा यह दोष दूर हो सकता है।

यात्री के ठहरने, स्नान, दर्शन, भ्रमण ग्रादि का प्रबन्ध ठीक न होने से उसे हानि उठानी पड़ती है ग्रौर तीर्थों के विषय में उसकी धारणा भी बिगड़ती है। तीर्थों के विषय में ग्रच्छी जानकारी देने वाली पुस्तिकाएँ होनी चाहिएँ। उनमें ग्रलग-ग्रलग तीर्थ स्थान के पण्डों तथा प्रदर्शकों के पते होने चाहिएँ।

प्राय: देखा गया है कि यात्री पर दान देने को दबाव डाला जाता है। पुजारियों को ऐसा करना शोभा नहीं देता। दान का सम्बन्ध इच्छा से है। जितनी जिस यात्री की शक्ति होती है उतना वह करता है। तीर्थ स्थानों में दुराचार, चोरी, ग्रपवित्रता बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। होता ऐसा नहीं है। बहुत से स्थान तो इन बुराइयों के ग्रड्डे हैं। सरकार इस दोष को हटाने में सतर्कता दिखलाये ग्रौर यात्री स्वयं इन बुरे स्थानों ग्रौर कामों से बचने का प्रयत्न करें।

ग्राजकल तीर्थयात्रा की गाड़ियाँ चलती हैं। सरकार उनमें किराये की छूट देती है ग्रौर ग्रन्य सुविधाएँ प्रदान करती है। किन्तु यात्री ट्रेन का प्रबन्ध करने वाले जनता के सेवक सच्ची सेवा भावना से कार्य नहीं करते। ग्रसहाय ग्रौर दुर्बल यात्रियो की उपेक्षा की जाती है। यात्री से ग्रधिक धन लेने के उपाय किये जाते हैं। उनको तीर्थ स्थानों की सही जानकारी नहीं दी जाती।

जिन स्थानों में सरोवर हैं ग्रौर पीने के पानी की कमी रहती है वहाँ मेले या तीर्थ के प्रबन्धकों को उसका ठीक प्रबन्ध करना चाहिए कि वे सरोवरों के जल को किसी प्रकार दूषित न करें। जिन सरोवरों का पानी रुका हुग्रा है उनमें स्नान करने की ग्रनुमति नहीं होनी चाहिए।

उन सरोवरों का पानी किसी मार्ग से बाहर लाकर यात्री के स्नान का प्रबन्ध हो।

तीर्थों की पवित्रता ठीक कायम रहे और यात्री की श्रद्धा में कोई कमी न आये, इसके लिए 'तीर्थ सेवक संघों' की स्थापना होनी चाहिए। यह कार्य सरकार का नहीं, जनता का है।

सब मिल एक जहाँ पर होते

अलग-अलग धर्मों के मानने वाले लोगों के बहुत से तीर्थ स्थान भारत में हैं। बहुत से ऐसे स्थान भी भारत में हैं जो तीर्थ नहीं हैं किन्तु तीर्थों की तरह ही उनका महत्त्व है। वे सब की एक मंजिल है। वे ऐसे स्थान हैं जहाँ सब राहें मिलती हैं और सब मिलकर एक होते हैं। सब धर्मों के लोग वहाँ जाते हैं और उन्हें देखकर भारत की सभ्यता का ज्ञान प्राप्त करते हैं। ये स्थान ऐसे हैं जिनका देश की पुरानी राजनीति, कला और रहन-सहन से सम्बन्ध रहा है। ये स्थान भी ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर हैं, पहाड़ों की गुफाओं में हैं और मैदानों में हैं। इनमें से कई राजाओं की राजधानियाँ हैं। दिल्ली, आगरा, अजन्ता, एलोरा, एलिफेन्टा की गुफाएँ, काश्मीर के बाग, मुसलमानों के दरगाह और विद्या तथा ज्ञान के केन्द्र ऐसे स्थान हैं जो किसी एक धर्म के नहीं हैं। सभी धर्म और मतों के मानने वाले देशी और विदेशी लोग इन स्थानों की यात्रा करते हैं। इन स्थानों से पुरानी सभ्यता का ज्ञान होता है। साथ ही पुराने राजाओं की रुचि और उनके मन बहलाव की बातों का भी ज्ञान होता है। मुगल बादशाहों के पास अपार धन था। वे सुन्दरता और कला के प्रेमी थे। अच्छे-अच्छे विशाल भवन बनवाना उनका विशेष कार्य था। कुछ पुराने गायकों और कलाकारों की समाधियों पर भी आजकल सभी धर्मों के लोग एकमत होकर एकत्र होते हैं और उत्सव मनाते हैं। ग्वालियर में तानसेन की समाधि पर हर साल भारत के गायकों का एक समारोह

होता है। उसमें हिन्दू-मुसलमान, ईसाई सभी धर्मों के गायक और सुनने वाले एकत्र होते हैं। मुसलमान पीरों और औलियों के मज़ारों पर भी सब धर्मों के लोग आते हैं। सबका उन पर अपने-अपने मन का विश्वास होता है। असल में यह स्थान ऐसे हैं जो मनुष्य को एक धर्म का पाठ पढ़ाते हैं आपस का भेद भाव व्यर्थ है ऐसा सन्देश इन स्थानों से मिलता है। ऐसे कुछ स्थानों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है जिन पर सभी धर्मों के लोग विश्वास करते हैं। भारत के ग्रामों में ऐसे स्थान बहुत हैं जो किसी देवी का थान हैं या किसी फकीर की समाधि है। वहाँ सब जातियों के लोग आते-जाते हैं। नोआखाली, दिल्ली का राजघाट, पंजाब का जलियानवाला बाग, यह ऐसे स्थान हैं जो आज तीर्थों की तरह पूजे जाते हैं।
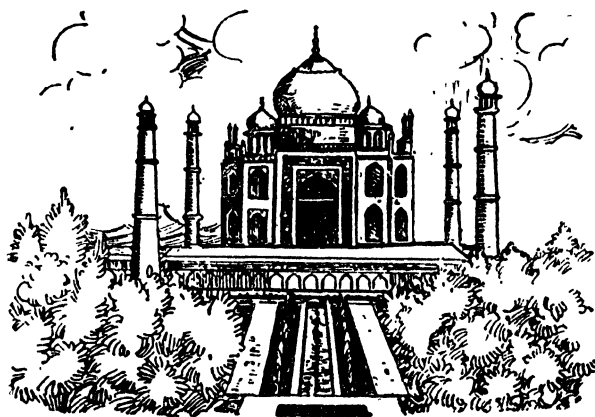
आगरा : ताजमहल

आगरा—उत्तर प्रदेश में आगरा एक प्रसिद्ध स्थान है। सबसे अधिक यात्री यहाँ आते हैं। यहाँ का ताजमहल अति सुन्दर बना हुआ है। अकबर बादशाह ने यहाँ एक लाल

पत्थर का किला बनवाया। इसके अतिरिक्त आगरे के पास और भी कुछ देखने योग्य इमारतें हैं। संगमरमर पर बारीक बेलबूटे का काम बहुत ही अच्छा है।

फतहपुर सीकरी—आगरे के पास फतहपुर सीकरी में शेख सलीम चिश्ती की दरगाह है। यह बहुत बड़े पीर हुए हैं। यहाँ प्रति वर्ष अनेक हिन्दू-मुसलमान एकत्र होते हैं।

लखनऊ—उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ नवाबी समय का प्रसिद्ध शहर है। नवाबों के बनवाये हुए विशाल भवन और बाग देखने योग्य हैं। इमामबाड़ा, रेजीडेन्सी, कैसर बाग आदि पुरानी शानशौकत के खण्डहर हैं जिनसे उस समय के जीवन और ऐश्वर्य का पता चलता है।

ब्रह्मतीर्थ और हलदौर—मुरादाबाद से दिल्ली जाने वाली लाइन पर गजरौला जंकशन है। वहाँ से ५ मील दूर ब्रह्मतीर्थ एक स्थान है। यहाँ से एक सन्त ब्रह्मा जी की समाधि है यह महात्मा अकबर के समय में हुए थे। उनका आश्रम यहाँ है। शिवरात्रि को मेला लगता है जिस में दूर-दूर से सभी मतों के यात्री यहाँ आते हैं। इसी तरह का एक स्थान मुरादाबाद से नज़ीबाबाद लाइन पर बिजनौर से ११ मील की दूरी पर हलदौर स्टेशन है। यहाँ बाबा मनसादास का मन्दिर है। बाबा मनसादास पहले कभी एक प्रसिद्ध सन्त हो गये हैं। यहाँ उनकी समाधि है। प्रतिदिन सहस्रों की संख्या में लोग इनकी समाधि पर एकत्र होते हैं। हिन्दू लोग बच्चों का मुण्डन यहाँ करवाने आते हैं।

ग्वालियर—आगरा-झाँसी रेलवे मार्ग पर यह एक बहुत बड़ा नगर है। यहाँ अनेक सुन्दर इमारतें हैं। यहाँ का किला दर्शनीय है। इसके अलावा यहाँ की मोती झील,

मान मंदिर, राजमहल, तानसेन और झाँसी की रानी की समाधियाँ दर्शनीय हैं।
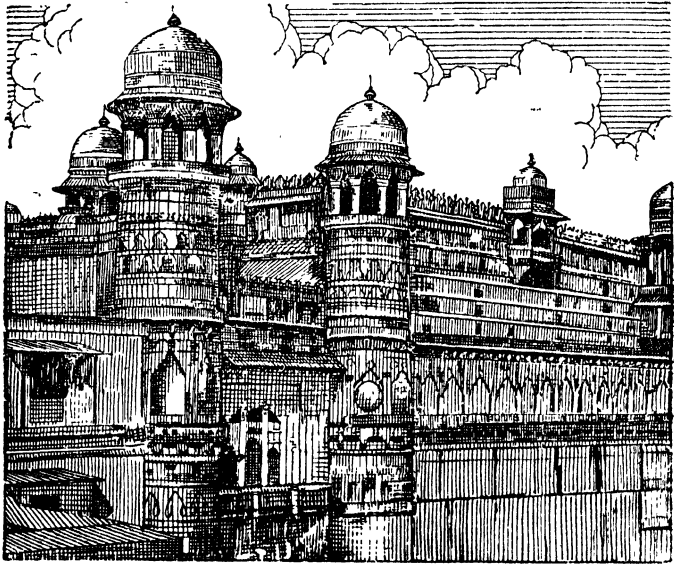
ग्वालियर : मान मंदिर

बम्बई—यह भारत का सबसे सुन्दर नगर है। यहाँ रेल और सड़क द्वारा पहुँचने के सभी मार्ग हैं। यहाँ के बहुत से मंदिर प्रसिद्ध एवं दर्शनीय हैं, इनमें लक्ष्मीनरायण, महा लक्ष्मी, बालकेश्वर, हनुमान जी और गुम्बा देवी और कालबा देवी के प्रसिद्ध मंदिर हैं। इसके अतिरिक्त समुद्र के किनारे गेट वे ऑफ इंडिया (भारत का प्रवेश द्वार) तथा मालाबार हिल देखने योग्य स्थान हैं।

साँची—झाँसी-भोपाल रेस मार्ग पर साँची स्टेशन है। उदयगिरी से साँची पास ही हैं। यहाँ बौद्ध स्तूप हैं, जिनमें एक ४२ फुट ऊँचा है। साँची घण्टी के शक्ल के स्तूपों के

लिए प्रसिद्ध है। साँची का स्तूप १२० फुट चौड़ा और ५४ फुट ऊँचा है। यहाँ साल में हजारों आदमी इसे देखने आते हैं।
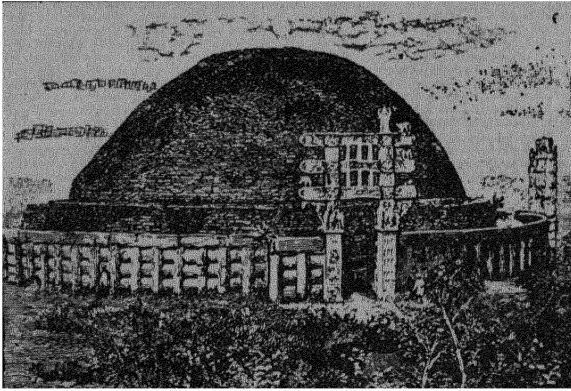
साँची का स्तूप

अजन्ता—दिल्ली से बम्बई जाने वाली लाइन पर एक

अजन्ता : बुद्ध की मूर्ति

जलगाँव स्टेशन है। जलगाँव से अजन्ता गुफा ३७ मील है। यह स्थान जलगाँव और औरंगाबाद के बीच में है। अजन्ता के चारों ओर पहाड़ हैं। इनके पास ही बाघोरा नदी है। पहाड़ों को काटकर २६ गुफाएँ बनाई गई हैं। ये गुफाएँ दीवारों पर बने चित्रों के लिए संसार में प्रसिद्ध हैं। अजंता में सब गुफाएँ बौद्ध गुफाएँ हैं।

एलोरा—एलोरा का पुराना नाम वेलूर है। औरंगाबाद से बस द्वारा इन तक जाया जाता है। ये गुफायें भी पहाड़ों को काटकर बनाई गई हैं। इनमें बौद्ध धर्म की गुफायें हैं जिनमें बुद्ध की मूर्तियाँ हैं। कुछ पौराणिक गुफायें हैं। इनमें कैलाश मन्दिर प्रसिद्ध है। कुछ गुफायें जैन गुफायें हैं जिनमें जगन्नाथ सभा मन्दिर प्रसिद्ध है।

एलोरा : शिव पार्वती का मन्दिर

खजुराहो—झाँसी-मानिकपुर रेल मार्ग पर हरपालपुर नाम का स्टेशन है। यहाँ से ६१ मील दूर मोटर से खजुराहो को मार्ग है। यहाँ बहुत से सुन्दर-सुन्दर देवी-देवताओं के अनेक मन्दिर हैं।
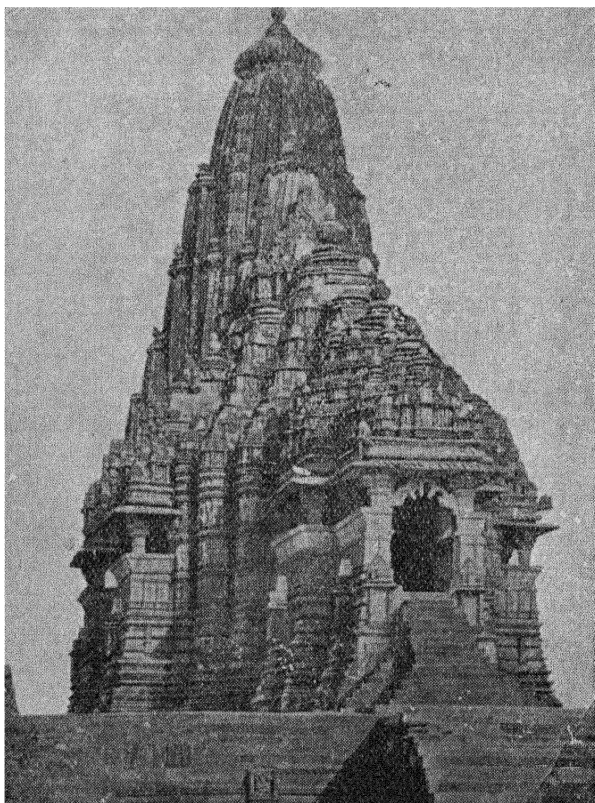
खजुराहो : कन्दरिया महादेव का मंदिर

एलिफेंटा—एलिफेंटा को धारापुरी भी कहते हैं। बंबई से प्रति रविवार को यहाँ स्टीमर जाता है। यहाँ गुफा के मंदिर से बाहर एक विशाल हाथी की मूर्ति थी। इसलिए

अंग्रेजों ने इसका नाम एलिफेंटा रक्खा। एलिफेन्टा गुफायें जिस द्वीप पर हैं वह चार मील घेरे का है। पर्वत काटकर गुफायें बनाई गई हैं इनमें चित्रमूर्ति गुफा प्रधान है। इन गुफाओं में हिन्दू देवताओं की बड़ी-बड़ी बेजोड़ मूर्तियाँ हैं। यहाँ की मूर्तियों को हमला करने वालों ने तोड़-फोड़ दिया है।

दिल्ली—(महात्मा गांधी की समाधि) भारत की राजधानी एक विशाल नगर है। यहाँ अनेक मंदिर और अनेक ऐतिहासिक भवन हैं। कहा जाता है कि पाण्डवों की राजधानी इन्द्रप्रस्थ कभी यहाँ थी। यहाँ कुतुबमीनार, लाल किला, बिड़ला मंदिर, राष्ट्रपति भवन, जन्तर मन्तर, रेडियो स्टेशन, अनेक दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ प्रतिवर्ष सहस्रों यात्री आते हैं। जनवरी में गणतंत्र दिवस पर दिल्ली का ऐश्वर्य देखते बनता है। भारत के प्रत्येक कोने से लोग यहाँ आते हैं। अलग-अलग प्रान्तों की सांस्कृतिक झाँकियाँ देखने को मिलती हैं। सभी धर्म और मतों के लोग एकत्र होकर आजादी का उत्सव मनाते हैं और लाल किले पर झंडा फहराया देखते हैं। यहीं जमुना के किनारे पर महात्मा गाँधी
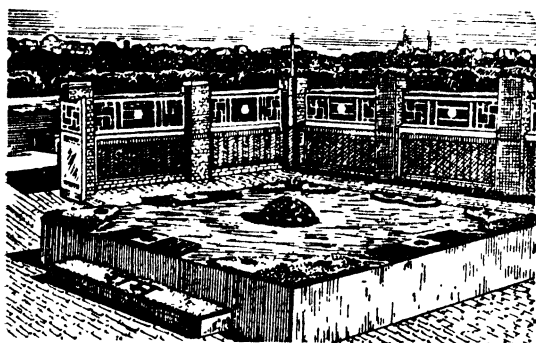
दिल्ली : महात्मा गांधी की समाधि

की समाधि है, जिसे संसार भर के लोग देखने आते हैं और फूल मालायें चढ़ाते हैं। भारत का आजकल का सबसे बड़ा तीर्थ और सबसे बड़ा यात्रा का स्थान यही राजघाट है। यहाँ लोग सब प्रकार के भेद-भावों को छोड़कर एकत्र होते हैं। भारत की आजादी के लिए अनेक नर-नारियों ने अपना जीवन दिया। महात्मा गाँधी उस आजादी के नेता थे इस लिए राजघाट आज के स्वतन्त्र भारत का तीर्थराज है।
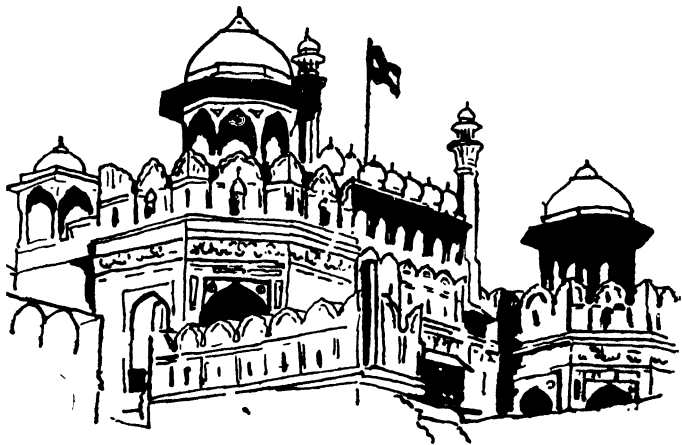
दिल्ली : लालकिला

महरौली—दिल्ली के समीप महरौली एक स्थान है यहाँ एक मेला लगता है। वह फूलवालों का मेला कहलाता है। यहाँ हिन्दू, मुसलमान तथा अन्य लोग मज़ार पर चादर चढ़ाते हैं। साल में एक बार बड़ा मेला लगता है।

दक्षिण में गुलबर्गा मुसलमानों की यात्रा का प्रसिद्ध स्थान है और हैदराबाद में भी कई प्रसिद्ध दरगाहें हैं। हिन्दू मुस्लिम सभी एकत्र होते हैं।
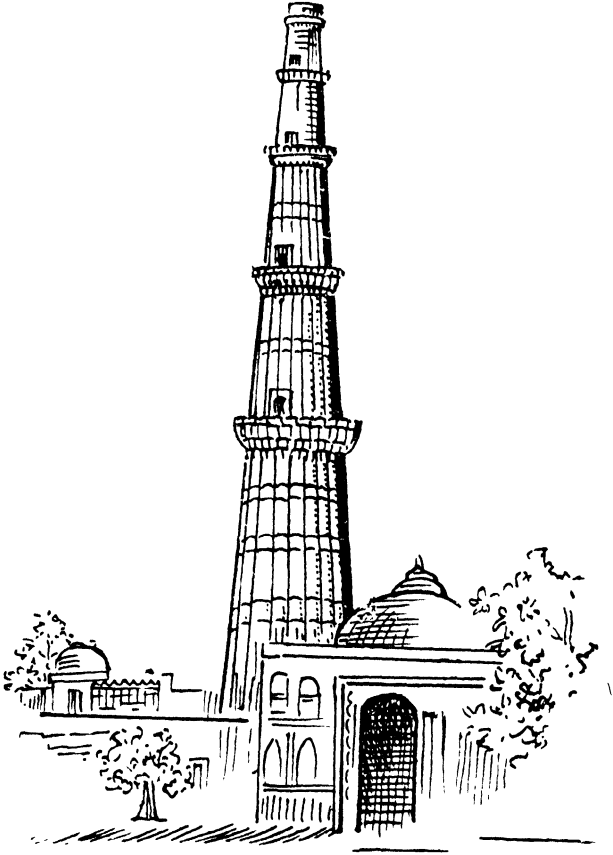
दिल्ली : कुतबमीनार

मटकेशाह—नई दिल्ली से मथुरा रोड पर एक स्थान है जो मटकेशाह का मज़ार कहलाता है। यह एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ हिन्दू-मुसलमान सभी लोग आकर अपनी इच्छा पूरी होने की कामना करते हैं। कोई सन्तान चाहता है और कोई व्यापार की सफलता चाहता है। जिसकी कामना पूरी हो जाती है वही मज़ार पर के वृक्षों में एक मटका लटका जाता है। ये मटके चढ़ाने वालों की शक्ति के अनुसार पीतल, तांबे और मिट्टी के होते हैं। यहाँ साल में एक बार बहुत बड़ा मेला लगता है। इस प्रकार के भारत में अनेक स्थान हैं। किन्तु इनकी प्रसिद्धि का क्षेत्र सीमित होता है।

करौली—पश्चिमी रेलवे की बम्बई-दिल्ली रेलवे मार्ग पर हिंडौन सिटी स्टेशन हैं। यहाँ से करौली के लिए मोटरें जाती हैं। करौली में कैलासी देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ (नवरात्रों) साल में दो बार बहुत भारी मेला होता है। मेले में बहुत दूर-दूर से यात्री देवी यात्रा को आते हैं।

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर—अमृतसर में सिक्खों का गुरुद्वारा, सोने का मंदिर अति प्रसिद्ध है। हिन्दू तथा सिक्ख दोनों ही समान भाव से मंदिर के दर्शन करते हैं। भारत के अनेक स्थानों से यहाँ यात्री आते हैं।

कश्मीर—कश्मीर भारत का स्वर्ग है। पठानकोट रेल स्टेशन से कश्मीर की यात्रा प्रारम्भ होती है। कश्मीर में हिन्दुओं के कई प्रसिद्ध मंदिर एवं मठ हैं। कश्मीर में मुगल बादशाहों के बनवाये हुए उद्यान अति प्रसिद्ध हैं। शालीमार तथा निशात बाग और नेहरू पार्क कश्मीर के बड़े ही मनभावक स्थान हैं। इनके अलावा कश्मीर में दो सुन्दर मस्जिदें हैं। नूरजहाँ की बनवाई हुई पत्थर मस्जिद बहुत सुन्दर है। कश्मीर के इन सुन्दर स्थानों की यात्रा नाव पर होती

है। सारा कश्मीर सुन्दर है। वहाँ लोग प्रकृति की सुन्दरता पर मुग्ध हो जाते हैं। बिना किसी भेद-भाव के सभी लोग इन सुन्दर स्थानों की यात्रा करके भारत के सौन्दर्य का दर्शन करते हैं।

जलियाँवाला बाग—अमृतसर के पास यह एक पवित्र एवं तीर्थ स्थान है। यहाँ भारत के अनेक शहीदों ने अपने प्राण, देश की आजादी के लिए कर्नल डायर की गोलियों के सामने न्योछावर कर दिए थे। इन शहीदों की यादगार में अभी भारत सरकार ने एक स्मारक बनवाया है जिसका अनावरण भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने १३ अप्रैल, १९६१ को किया। एक शायर ने कहा है—

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।।
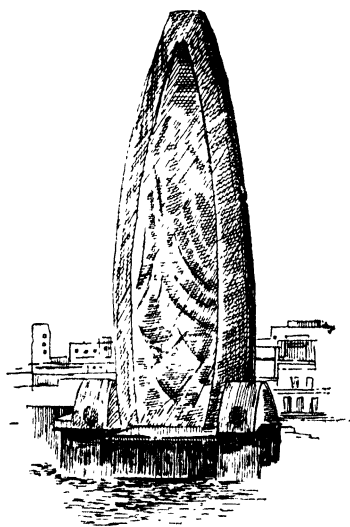
जलियांवाला बाग : लाल पत्थर का बना शहीद स्मारक

कलकत्ता—कलकत्ता भारत की महानगरी है। यह गंगा तट पर स्थित है। यहाँ के प्रसिद्ध एवं दर्शनीय कई मंदिर हैं–आदिकाली, काली मंदिर, दक्षिणेश्वर और बेलूरमठ। यहाँ जैनियों के भी बहुत ही सुन्दर मंदिर हैं। यह पूर्वी बंगाल राज्य की राजधानी है।

पटना—यह नगर गंगा तट पर बसा है। इसका पुराना नाम पाटलिपुत्र है। यहाँ पर सिक्खों के गुरू श्री गोविन्द-सिंह जी की जन्म-भूमि होने से यह सिक्खों का भी तीर्थ है। गुरू गोविन्दसिंह जी की जन्म-भूमि पर प्रसिद्ध मंदिर हरिमंदिर बना हुआ है जो दर्शनीय है। इसके अलावा कई मंदिर दर्शनीय हैं—पटनादेवी मंदिर, लक्ष्मीनरायण मंदिर आदि।

नए तीर्थ

आजादी मिलने के बाद देश में बहुत से ऐसे काम किये गये हैं जिनका मतलब देश के हरेक व्यक्ति को सुखी और धनवान बनाना है। भारत खेतिहर देश है। खेती की उन्नति पर देश की बहुत-कुछ उन्नति निर्भर है। इसके साथ ही देश के उद्योग को भी बढ़ावा देना अति आवश्यक समझा गया क्योंकि आज विज्ञान का युग है। लोहे का सामान बड़ी-बड़ी मशीनों का उत्पादन देश को धनवान बनाने के लिए आवश्यक है। देश की सरकार की अनेक योजनाओं में खेती के लिए भूमि और भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए साधन शामिल किए गए। एक बड़ी सिंचाई योजना को चालू करते हुए प्रधान मंत्री नेहरूजी ने कहा था 'यह स्थान हमारे देश का सबसे बड़ा तीर्थ है'। पुराने तीर्थों में व्यक्ति को अपने लाभ की भावना थी। इन नये तीर्थों में व्यक्ति के सामूहिक लाभ की भावना है। ये नये तीर्थ देश को अभाव, भुखमरी और निर्धनता से मुक्ति दिलाने वाले हैं। सहस्रों की संख्या में लोग इन तीर्थों की यात्रा करते हैं और करेंगे। खटीमा पनबिजली घर, शारदा सागर, रिहन्द तथा माता टीला बाँध, भाखड़ा-नंगल योजना, दामोदर घाटी योजना, दुर्गापुर इस्पात कारखाना, राउरकेला, भिलाई, मीनाक्षी योजना आदि ऐसे ही स्थान हैं जो हमारे देश के नये तीर्थ हैं। विदेशों से आने वाले बड़े-बड़े व्यक्ति इन तीर्थों का दर्शन करते हैं और भारत को बढ़ी हुई समृद्धि की प्रशंसा करते हैं। प्रत्येक भारतीय विशाल योजनाओं के केन्द्र

इन नये तीर्थों का दर्शन करके अपने देश की महानता का अनुभव करेगा ।
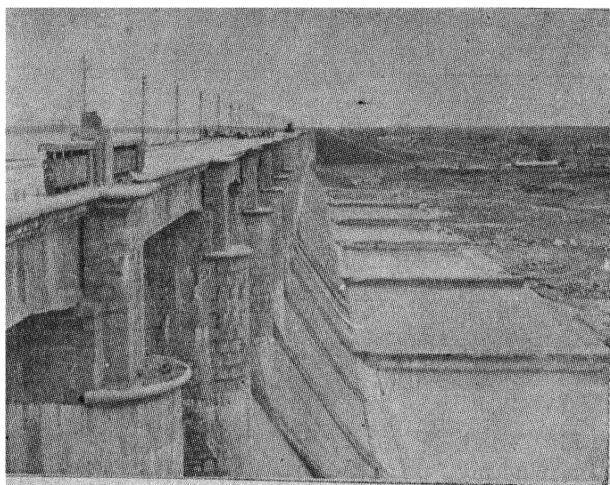
माता टीला बाँध योजना का दृश्य

रिहन्द बाँध—उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में रिहन्द बाँध बिजली और सिंचाई की बहुत बड़ी योजना है। इसमें ४६ करोड़ के लगभग रुपये का व्यय होगा और २५००० किलोवाट बिजली मिलेगी । राबर्ट गंज स्टेशन और चुर्क सीमेंट के कारखाने से सड़कें बनकर तैयार हो चुकी हैं और सोन नदी पर एक विशाल पुल का निर्माण हो रहा है । रिहन्द बाँध और उसके समीप के ये नये स्थान दर्शनीय स्थान हैं ।

शारदा सागर--उत्तर प्रदेश एवं नेपाल की सीमा पर शारदा नहर के पूर्वी किनारे पर एक १२ मील लम्बे सरोवर का निर्माण हो रहा है । इस सागर से १७२००० एकड़ भूमि की सिंचाई होगी । हर महीने सैकड़ों यात्री मन

बहलाव तथा जानकारी के लिए इस स्थान के दर्शन करने आया जाया करते हैं ।

भाखड़ा-नंगल—भारत में एशिया की सबसे बड़ी सिंचाई योजना भाखड़ा-नंगल है । इसमें अम्बाला जिले के रूपर
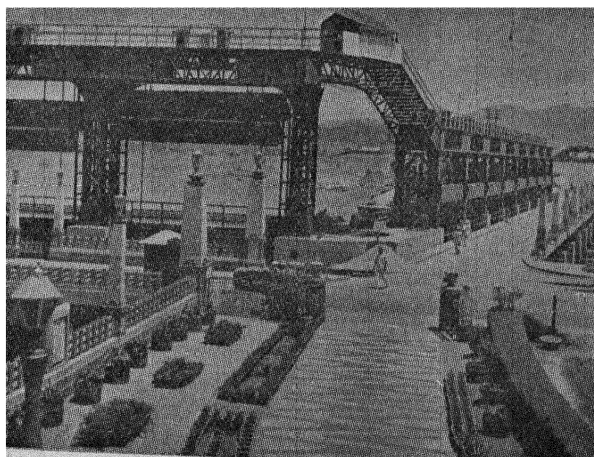
भाखड़ा-नंगल का एक दृश्य

स्थान से ५० मील ऊपर सतलज नदी पर बाँध बाँधना, बाँध के नीचे बिजली घर बनाना, नंगल से पनबिजली की लाइन लगाना, और कोटला तथा गंगवाल में बिजली घर बनाना सम्मिलित है । इसका लगभग अधिकांश पूरा हो चुका है । इससे पंजाब तथा राजस्थान की ३६ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होगी और दिल्ली तथा हिमाचल प्रदेश को बिजली दी जायेगी । ८ जुलाई १९५९ को प्रधानमंत्री नेहरू ने इसकी नहर-प्रणाली चालू की थी । १ नवम्बर १९५५ में राष्ट्रपति ने गंगवाल के बिजली घर का उद्घाटन किया था । यह भारत की बहुत बड़ी योजना है । चाऊ-एन-लाई तथा

ख्रुश्चोव ने और अन्य विदेशी अतिथियों ने इस स्थान को देखा और वे इतनी बड़ी प्रगति को देखकर चकित रह गये। भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों से अनेक लोग उत्सुक होकर इसे देखने आते हैं।

हीराकुड बाँध योजना—दक्षिण में महानदी पर बाँध लगाकर यह योजना पूरी की जायेगी। बेलनगिरि तथा
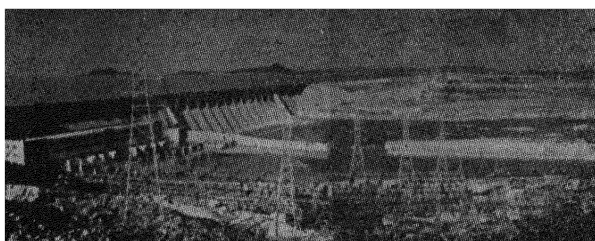
हीराकुड बांध योजना का एक दृश्य

सम्भलपुर जिलों की लगभग ७ लाख एकड़ जमीन की सिंचाई इससे होगी। २८८ वर्ग मील भूमि पर सरोवर बनाया जा रहा है। इसकी लागत लगभग ७१ करोड़ रुपये होगी। इस योजना के पुल और बाँध का काम पूरा हो गया है। इसके साथ हो डेल्टा सिंचाई योजना भी स्वीकृत हो चुकी है।

दामोदर घाटी योजना—बिहार एवं बंगाल को प्रति-वर्ष इस नदी की बाढ़ से जान-माल की अपार हानि उठानी होती है। इस योजना के अनुसार नदी और उसकी सहायक नदियों को बाँध कर इसका पानी सिंचाई के लिए लिया जायेगा। इस पर तिलैया, कोनार, मैथन, और पंचेट हिल चार स्थानों पर बाँध बनाये जायेंगे। इसमें से अधिकांश कार्य पूरा हो चुका है।
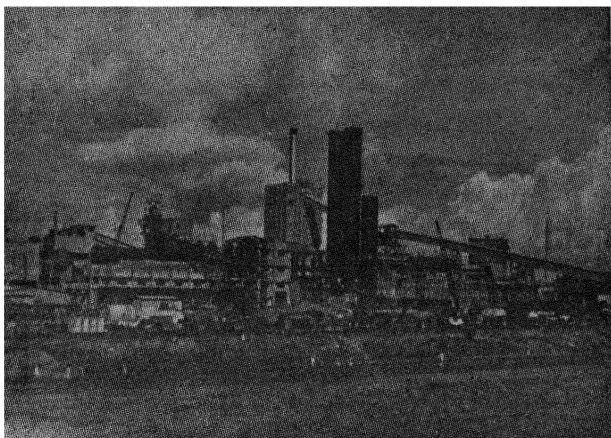
दुर्गापुर इस्पात कारखाने का दृश्य

दुर्गापुर—दुर्गापुर आज के भारत का सबसे बड़ा तीर्थ है। ऐसा तीर्थ जहाँ अंग्रेज, हिन्दुस्तानी, मजदूर-पूंजीपति, छोटे-बड़े सब कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते हैं और रहते हैं। श्रम और लगन के साथ में स्थान की भी काया पलट हो जाती है। कलकत्ता से ११८ मील दूर बर्दवान और मांससौल के बीच बड़ी सड़क पर एक छोटा सा गाँव दुर्गापुर था। आज वह इंग्लैंड के पिट्सबर्ग और मानचैस्टर से भी अधिक बड़ा क्षेत्र है। २९ दिसम्बर १९५९ को यहाँ एक इस्पात का कारखाना चालू किया गया। यह स्थान आज विश्व में प्रसिद्ध हो चुका है। इस कारखाने पर लगभग डेढ़ अरब रुपया खर्च होगा। ब्रिटेन की सबसे बड़ी १३ फर्में इस कारखाने के निर्माण में हाथ बंटा रही हैं। दुर्गापुर का आधुनिक क्षेत्र मीलों में है। २० मील की लम्बी चौड़ी सड़कें हैं। कर्मचारियों के रहने की बस्ती है। मनोरंजन का स्थान, सरोवर, विद्यालय और अस्पताल सब कुछ यहाँ

हैं। बहुत से विदेशी इस स्थान पर बरसों से आ रहे हैं। यह भारत का ही नहीं विश्व का एक दर्शनीय स्थान है।
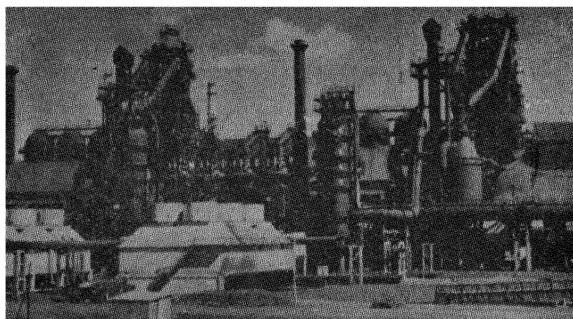
राउरकेला भिलाई कारखाने का एक दृश्य

राउरकेला भिलाई—भिलाई एवं जमशेदपुर के बीच रेलवे लाइन पर राउरकेला एक स्थान है जहाँ इस्पात का एक बड़ा कारख़ाना बनाया जा रहा है। यह कारखाना चालू हो चुका है। यहाँ तीन इस्पात के प्लान्ट हैं प्रत्येक की लागत लगभग १० लाख है और उनसे ४५०००० टन इस्पात ढलेगा। राउरकेला इस्पात क्षेत्र १२८ करोड़ लागत का है और उससे ७२०,०० टन इस्पात प्रति वर्ष बनेगा।

मध्यप्रदेश में भिलाई में भी इसी प्रकार का एक कारखाना है जिसके यंत्र की लागत १२० करोड़ है और जिससे ७७,००० टन इस्पात बनेगा।

नये युग की यह योजनायें देश की प्रगति का संकेत करती हैं। उन्हें देखकर प्रत्येक देशभक्त भारतीय गौरव का अनुभव करता है।

●